UGC Approved Research Journal No. 47816
पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

ISSN : 2456-8856
डाक पंजीकृत क्रमांक 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

Peer Reviewed Bilingual Monthly International Research Journal

आश्वस्त

वर्ष 22, अंक 194

नवम्बर 2019

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 22 अंक 194
नवम्बर 2019

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	'माण्डी' समीक्षात्मक अनुशीलन	डॉ. हंसराज चौहान	04
3.	महिला मुक्ति का रामबाण उपाय: आम्बेडकरवादी चिंतन	डॉ. एन.एस.परमार	07
4.	क्या कारण है कि दलित, पिछड़े, बहुसंख्यक होकर भी सत्ता से दूर है ?	बी.एल.परमार	12
5.	कैसे हो, भारत में आमूलचूल क्रांति	डॉ. रणजीत	13
6.	कविताएं /गीत/ ग़ज़ल		16
7.	लघुकथाएं		21
8.	हौंसलों की उड़ान : दलित उत्पीड़न का यथार्थ दस्तावेज (पुस्तक समीक्षा)	डॉ. अमित भाई एन.पटेल (समीक्षक)	24

UGC द्वारा मान्यता 47816 प्राप्त पत्रिका

खाते का नाम - आश्वस्त
खाते का नं.- **63040357829**
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन
IFS Code - SBIN0030108

E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 15/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 150/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 1,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 10,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

देश के दलित–शोषित व वंचित वर्ग को सम्मान, अधिकार, समानता व बंधुता का दर्जा चाहिए। इनको बराबरी का स्तर चाहिए जिसके लिये डॉ. अम्बेडकर का चिंतन एवं दर्शन सदैव पक्षधर रहा है।

वर्तमान भारतीय सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवेश खुशहाल नहीं कहा जा सकता। दलितों की सुननेवाला कोई नहीं है, बल्कि उनको हथियार बनाकर झूठे झांसे देकर सत्ता पाने की हर संभव जुगत लगाई जा रही है। सरकार किसी भी दल की बने परन्तु हलाल होने वाले तो दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक और महिलाएं ही होती है।

एक तरफ तो डॉ. अम्बेडकर का नाम बार–बार प्रयोग कर इस वर्ग को गुमराह करने के प्रयास होते है और दूसरी ओर बाबासाहेब की मूर्तियों को तोड़ा जा रहा है, यह कैसा दोहरा व्यवहार है। मूर्तियों को तोड़कर ये लोग क्या सिद्ध करना चाहते हैं ?

स्वतंत्रता प्राप्ति के 72 वर्ष एवं संविधान लागू हुए 69 वर्षों के बाद भी सामाजिक समानता स्थापित नहीं हो पाने का यक्ष प्रश्न हमारे सामने खड़ा है। संविधान शिल्पी बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश को भारत का संविधान सौंपते हुए अपने सम्बोधान में कहा था कि – "राजनैतिक आजादी का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक देश सामाजिक, आर्थिक गुलामी से मुक्त नहीं होता है। यह संविधान देश के नागरिकों को सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाने के लिए कानूनी पहल का महत्वपूर्ण दस्तावेज है, बशर्ते उसको लागू करनेवालों की नियत दुरुस्त हो और उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता देश के कमजोर तबके के प्रति हो।

हजारों वर्षों तक दबे–कुचले समाज को आजादी की इस नई सुबह में जब तक उन्हें विशेष सुविधाएं और अवसर नहीं दिए जायेंगे, तब तक, सामंती व्यवस्था में जकड़ा हमारा सामंती सामाजिक वातावरण जब तक जड़ से खत्म नहीं किया जाता है तब तक, किसी भी तरह की गैर–बराबरी समाप्त किए जाने का सपना देखना निराधार होगा।'

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को 125वें जन्मोत्सव एवं संविधान दिवस 2015 के अवसर पर संसद में अपना उद्बोधन देते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने कहा था कि–बाबा साहेब की दीर्घ दृष्टि के सभी प्रशंसक रहे है। जब हमारा संविधान बना तब संविधान सभा के प्रोविजनल चेयरमेन श्रीमान सच्चिदानन्द सिन्हाजी ने एक बात कही थी, उसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा था और उन्होंने अमरीकी संविधान के बारे में जोसेफ स्टोरी के शब्दों का उल्लेख किया था। जोसेफ स्टोरी ने कहा था कि–"The constitution has been reared for immortality if the work of man may justly aspire to such a title, संविधान अमर रहने के लिये बनाया गया है। मनुष्य के द्वारा कभी कोई चीज अमर हो नहीं सकती, लेकिन संविधान अमर हो सकता है ये बात कही गई थी। मनुष्य कभी ये नहीं कर सकता है, लेकिन किया था।

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की विशेषता की ओर हम नजर करें। दीर्घ दृष्टा और महापुरुष कैसे होते हैं, इसका एक उदाहरण है कि अगर किसी को सरकार पर प्रहार करना है तो भी कोटेशन बाबा साहेब का काम आता है। किसी को अपने बचाव के लिए उपयोग करना है, तो भी कोटेशन बाबासाहब का काम आता है। किसी को अपनी न्यूट्रल बात बतानी हो तो भी कोटेशन बाबासाहेब का काम आता है। इसका मतलब उस महापुरुष में कितनी दीर्घदृष्टि थी, कितना विज़न था, कितने व्यापक फलक पर उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त किया था कि जो आज भी विरोध करने के लिए भी मार्गदर्शक है, शासन चलाने वाले के लिए भी मार्गदर्शक है। न्यूट्रल मूक रक्षक बैठे लोगों के लिए भी यह मार्गदर्शक है। यह अपने आप में थोड़ा अजूबा है। वरना विचार तो कई होते हैं, हर विचार एक ही खेमे के काम आते हैं। सब खेमों के लिये काम नहीं आते। एक ही कालखण्ड के लिए काम आते हैं। सब कालखण्डों के लिये काम नहीं आते हैं। बाबासाहेब की विशेषता रही है कि उनके विचार हर कालखण्ड के लिए हैं, हर पीढ़ी के लिए, हर तबके के लिए उपकारक रहे हैं। मतलब उन विचारों में ताकत थी। तपस्या का एक अर्थ था जो राष्ट्र को समर्पित था और 100 साल के बाद का भी देश कैसा हो सकता है, यह देखने का सामर्थ्य था। तब जाकर के इस प्रकार की बात निकल पाती है और इसलिये सहज रूप से उस महापुरुष को नमन करने का मन होना बहुत ही स्वाभाविक है।

जय भीम! जय संविधान! जय भारत!

डॉ. तारा परमार

'माण्डी' समीक्षात्मक अनुशीलन

डॉ. हंसराज चौहान

वरिष्ठ कथाकार रत्नकुमार सांभरिया द्वारा रचित कहानी "मांडी" अपने प्रकाशन के साथ ही यह कहानी चर्चा में रही। साहित्य वार्षिकी–2012 में प्रकाशित हुई।

भारतीय सनातन धर्म अमावस्या के पितृ पक्ष में घर की पहली सिकी रोटी (मांडी) पितरों को तर्पण करने के लिए दी जाती है उसके पश्चात ही घर के लोग अन्न–जल ग्रहण करते है। ऐसे में गाय का उचित स्थान पर न मिलना बड़ा ही मानसिक पीड़ा का कार्य है और हार–थक कर गाय मिली भी तो किसी मेहतर के घर, जिसकी गाय को मांडी देना धर्म–भ्रष्ट होना है, जैसा कि पण्डित दानीदास के द्वारा व्यवहार परायण है।

गाय का मांडी देने की सनातन रिवाज के तहत ब्राह्मणवादी दानीदास अपने अन्दर से कैसे तिल–तिल टूट रहा है, वह उसकी धर्मान्धता है। ऐसा प्रतीत होता है कि दानीदास जैसे व्यक्ति ने तो जानवरों को भी मानों चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के अनुसार जातियों में विभाजित कर दिया है।

कथाकार ने आज के दौर का सजीव चित्रण मांडी कहानी में किया है कि वर्तमान में गांवों में गायों की बहुत कमी है, क्योंकि गाय से अधिक दुधारु भैंस हैं और बैलों की जगह खेती–बाड़ी घर–घर ट्रक्टर आ गये हैं। इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धर्म के स्थान पर अर्थ (धन) ने और जड़ता के स्थान पर शिक्षा ने अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है।

शहरों में गौमाता सड़कों पर दिखायी दे सकती हैं, गौशालाओं में कैद मिल सकती हैं लेकिन गाँवों में अब वह दुर्लभ प्रजाति का जीव बनती जा रही है।

दानीदास मांडी हाथ लेकर गौमाता की तलाश में निकलता है। लेकिन सूबेसिंह मेहतर के अलावा किसी के खूंटे गाय नहीं मिलती है। वह सूबेसिंह की गली से निकलता है और उसकी पत्नी कुमुद को गाय दुहते देख लेता है लेकिन मेहतर के आंगन बंधी गाय को मांडी देना उसके लिए धर्म से अपदस्त होना है। वह दर–दर भटकता रहता है। जहां जाता है, वही सुनने को मिलता है कि हम तो सूबेसिंह मेहतर की गाय को मांडी दे आये है, आप भी उसकी गाय को मांडी दे आओ। लेकिन धर्मान्धता आड़े आती है–"मेहतर के चौक उसकी गाय को मांडी दे। पाप–कोढ़ उतरेंगे। कदम मोड़ते, उन्होंने गाय दुहती कुमुद की ओर टकटकाया। बत्तीसी किटकिटाई। उसकी सास की ओर हेय–दृष्टि घूरा। उसका जात्याभिमान फुँफकार उठा था, "वक्त बादशाह था। अपदस्त हो गया। यह मौनी है ना लम्बी झॉडू लिए बुहरा करती थी, हमारे। झोली आगे बड़ा कर जूठन ओटती थी।"

दानीदास के इस संस्मरण से स्पष्ट होता है कि उसमें कितनी अधिक जातीयता है, वह मेहतर के आंगन गाय देखकर तथा सूबेसिंह की माँ मोनी के द्वारा अपनी पोती को विद्यालय के लिए तैयार करते देखकर तिलमिला उठता है। दानी यही सोचता है कि सम्पन्नता और शिक्षा हमारे जन्मसिद्वअधिकार हुआ करते थे, लेकिन आज स्वतन्त्र भारत में शिक्षा, समानता, सम्पन्नता पर सभी का समान अधिकार है। चाहे वह मेहतर जाति का सूबेसिंह ही क्यों न हो।

सांभरिया की मांडी ब्राह्मणवाद पर चोट है कि

ब्राह्मणवादियों को अपनी मानसिकता बदल लेनी चाहिए। क्योंकि उनका प्रतीक दानीदास इतना टूट रहा है, उसको खाये जा रहा है, जिस घर के आंगन कभी सूअर घूमा करते थे उस घर–आंगन में गाय को देखकर वह क्यों दुःखी है? वह इस युग–परिवर्तन और बहुजन विकास से क्यों सहमत नहीं है?क्या वह संविधान में आस्था नहीं रखना चाहता? क्यों उसे लोकतंत्र नहीं भाता?

एक बड़ा प्रश्न कथाकार पाठकों के मध्य छोड़ता है। दानीदास की खोज जारी है। वह सूबेसिंह की गाय को तो मांडी नहीं देता, उसके कदम आगे बढ़ते हैं। वह सम्मत यादव के घर की ओर जाता है लेकिन सम्मत के यहाँ भी उसको असफलता हाथ लगती है। पन्द्रह दिन पहले जिस घर में गाय थी, आज वहाँ मुर्रा भैंस खूंटे बंधी है। व्यक्ति फायदे का सौदा करता है। सम्मत आज सम्पन्न हो रहा है। शिक्षा की वजह से उसका बेटा नौकरी लग गया है। दो बैलों की जोड़ी की जगह ट्रेक्टर ने ले ली है और बड़े ठाट–बाट से रहने लगा है। बड़ी–बड़ी तावदार मूंछो के साथ धोती जाँघों तक चढ़ाये ट्रैक्टर के पहिये पर बैठा सूल्फी पी रहा है।

सम्मत की शोहरत दानीदास को चोट पहुँचाती है। वह ईर्ष्यावश जलता जा रहा है क्योंकि सम्मत भी तो आखिरकार शूद्र ही तो है–"तुम सूदर–सूदर एक हो रहे हो, क्या बामण सूदर हो जाये, तुम्हारी मिजाज से ? पित्तर, पचवीर, मोक्ष, बैकुण्ड, जात–पात छुआ–छूत, धर्म–ध्वज सबके सब ताक पर उठा कर रख दे, तुम्हारी कहे ?"

आधुनिक शिक्षा, समझ, लोकतंत्र के कारण चातुर्वर्ण्यव्यवस्था की ब्राह्मणवादी रीढ के साथ ही सामन्तवाद का युग नेस्तनाबूद होता जा रहा है। मांडी कहानी में ठाकुर निखार सिंह के घर व परिवार का चित्र उकेर कर कहानीकार सांभरिया ने इस बात को पाठकों के सामने एक चित्रात्मकशैली में प्रस्तुत किया है–"उम्रदराज और फिक्र के बढ़ते दरिया के कारण थुल–थुल निखार सिंह का शरीर काला पड़ता गया था। क्षमता जवाब दे रही थी। पहले उसकी कमर तीर सी थी, कमान सी मुड़ती जा रही है, दिन–ब–दिन। हथकढ दारु और उसकी अवैध बिक्री के फेर निखार सिंह के तीनों लड़के थाना–तहसील और कोर्ट–कचहरी के फेरे जूतियां घिस रहे थे। निखार सिंह को छोड, आज गाँव का एक–एक आदमी ठिकानेदार है और ठसक से जीता है।"

कहानी में स्वतन्त्र भारत में कानून–व्यवस्था पर विश्वास प्रकट किया गया है। अपराधी और अपराध की उम्र लम्बी नहीं होती। आज निखार सिंह के बेटे अपने आपराधिक कृत्य के कारण कानून की सजा भुगत रहे हैं।

निखार सिंह "गोदान" उपन्यास के सामन्त राय साहब की तरह अपनी सामन्ती के टूटने को स्वीकार भी करता है–"दानी, तुमसे क्या छानी (छुपा हुआ)? दुर्दिन है हमारे। मेरी सौ एकड़ जमीन मुट्ठी के रेत की तरह निकलती गई। गाय! आव चवन्नी। जाव रुपया। कान सेदता सोना नहीं सुहाता। खरीददार ने मुट्ठी बन्द करके हथेली पर जो रख दिया, लो लिया।"

वह खुन्नस खाकर दानीदास को जवाब देता है–"आजकल किसान जमींदारों बामण–बनियो ने तो गाय रखनी छोड़ दी है। मेहतर–चमार धर्म की डोर डाटे हैं। सूबेसिंह मेहतर या रुक्का चमार के घर दे आओ मांडी।"

दानीदास लम्बी साँसें लेता रुक्का के घर की ओर निकल पड़ता है। राह में मांडी की सुगन्ध पाकर कुत्ते उसके पैरों के इर्द–गिर्द चक्कर लगाने लगते हैं। गऊमाता भारतीय संस्कृति का संजीव देवता है। मावस

की मांडी पर केवल और केवल उसीका एकाअधिकार है। गाय का उच्चवर्ण में ना मिलना एक बड़े मिथक का टूटना है।

एक ओर जहाँ "गोदान" के होरी की गाय की अभिलाषा एक किसान को मजदूर बनाने के साथ–साथ मृत्यु–पर्यन्त उसका पीछा नहीं छोड़ती, वहीं "मांडी" की गाय एक उच्चवर्गीय ब्राह्मणवाद को दीन–हीन बनाती हुई तोड़ रही है। यह प्रेमचन्द युग की गाय नहीं, सांभरिया युग की गाय है। यह जीव उपयोगिता का युग परिवर्तन है। होरी गऊमाता के अभाव में और गऊमाता को पाने की चाह में, शोषण करवाता है, वही सूबेसिंह मेहतर गऊमाता को अपने घर में रखकर उच्चवर्ग की कलुषित मानसिकता को आईना दिखाता चुनौती दे रहा है।

ब्राह्मण दम्पती दानीदास, सुबती दोनों में वैचारिक अन्तर है। दानीदास स्वयं ब्राह्मणवाद है, जबकि पत्नी सुबती ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवादी नहीं है। ब्राह्मणवाद के चलते स्वयं दानीदास कितना दुःखी है। भूखा–प्यासा भटक रहा है, पोते–पोती भूख से बिलख रहे है। पैरों में भरभूट–काँटे लग रहे हैं लेकिन वह अपनी धर्मान्धता के कारण मेहतर की गाय को मांडी नहीं देता है, जबकि पत्नी सुबती जो कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता है, शिक्षा और शहर से जुड़ी हुई है, वह दानी की सोच के विषय में कहती है–"छोटा आदमी ऊपर उठता है बड़ा होता है। बड़ा आदमी नीचे आता है। ये छोटे लोग हैं ना आपसे ज्यादा बड़े हैं। उनमें आप जैसी छोटी सोच नहीं है। मैं सूबेसिंह की गाय को उसके खूँटे से खोलकर अपने चौक में ला खड़ी करती हूँ। आपके धर्म की हानि भी नहीं होगी और जात बड़ी की बड़ी रह जाएगी आपकी।"

कर्मकाण्डी दानीदास मेहतर के घर से परहेज रखता है, लेकिन ढाणी में रहते मुसलमान सल्लुद्दीन के घर जाकर मांडी देने को तैयार हो जाता है। अलबत्ता मनु वर्णव्यवस्था में मुसलमानों का वर्गीकरण नहीं किया गया था, 'अरे भई, मेरा नाम लेकर कह दो सालू भाई से कि पंडित दानीदास आ रहे हैं, तुम्हारी गाय को मांडी देने !"

दानीदास सल्लुद्दीन के घर की ओर मीलों पैदल चलता निकल जाता है। गाँव की सीमा से बाहर मेड पर चलता काँटे चुभते सड़क किनारे निकलता सोचता है कि इतने समय मैं तो शहर ही जाकर मांडी दे आता। इतने में खेत में चरती एक गाय उसे नजर आती है। जिसके सींगो के रस्सी बँधी थी। गाय की मालकिन कुमुद गाय को बाँध कर घास काट रही थी। दानीदास गाय के नजदीक पहुँचता है। सूबेसिंह की पत्नी कुमुद समझ जाती है कि पण्डित गाय को मांडी दे रहा है, जैसे ही दानीदास गाय के मुँह के पास मांडी ले जाता है कुमुद रस्सी खींच लेती है। गाय का मुँह मांडी से दूर हो जाता है और मांडी मिट्टी में गिर जाती है।

अपने प्रकाशन के साथ ही कहानी पर बहस इस बात पर चली और प्रायः मार्क्सवादी भी पक्षधर थे कि सांभरिया के द्वारा गाय को मांडी खिलाकर दानीदास की भावना का तर्पण करना चाहिए था, लेकिन लेखक का तर्क यह रहा कि यदि कहानी में गाय को मांडी खिला दी जाती तो कहानी पूर्णरूपेण ब्राह्मणवाद के आगोश में सिमट कर रह जाती। जहाँ तक कहानी के कलात्मक सौन्दर्य का प्रश्न है तो कहानीकार ने फणीश्वरनाथ रेणु के "मैला आंचल" उपन्यास की भाँति कहानी के आरंभ में ही इसकी आँचलिकता की ओर संकेत कर दिया है–"राजस्थान और हरियाणा की सीमा संधि पर बसा एक गाँव।"

शब्द चयन में भी सांभरिया जी ने इसका पूर्ण निर्वाह किया है। नोहरा, न्यार, धिकी, सेदता, जाया, लार, ल्हास, सगली, भेली, धनी(धणी), नपूता, जेवड़ा,

मोड़े आदि शब्द भाषा को जीवंत कर देते हैं।

जीवन की भाषा को कथा की भाषा में तब्दील कर ग्रामीण संस्कृति की छवि प्रस्तुत की गई है।

नई संवेदना और नये शिल्प का प्रयोग करते हुए कथाकार ने संवेदनात्मक दीप्ति शैली का प्रयोग किया है। जब सुबती अपनी गाय का स्मरण करती है तब उसकी संवेदना देखने लायक बन पड़ी है—"सुबती की ओर देख गाय रँभाई। बाँ—बाँ करते गर्दन उठाई। वह गाय के पास आ खड़ी हुई थी। सुबती ने गाय के माथे पर हाथ फेरा। पीठ पर हाथ फेरा। गाय ने आँसूभरी अपनी गर्दन सुबती के कन्धों पर टीका दी थी।"

कहानी में संवाद चुटीले व भावप्रवण है, छोटे—छोटे संवाद पठन में सरसता व सरलता लिये हुए हैं—"दादा टेम टेम की बात है।"

बिम्बात्मता के साथ—साथ शब्द चित्रात्मकता एवं अलंकारिकता की अनूठी झलक भी द्रष्टव्य है—"वक्त था। मुद्रा थी। मदिरा थी। मादा थी। माँस था। सांमती थी। ठिकाना था। ठें थी। ठसक थी। फूँक से घास जलती थी। वक्त है भूख है। सूख है। हारी है। बीमारी है। थाना है। कचहरी है। तिल—तिल मरती जिन्दगी है, निखार सिंह की।"

कहानीकार के अपने नवीन उपमान हैं—

ट्रेक्टर का पहिया नहीं, चाँद हो पूर्णमासी का, तीर—सी कमर, कमान सी मुड़ती कमर।

मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया गया है, "मुट्ठी की रेत की तरह, "आव चवन्नी, जाव रुपया, कोर्ट—कचहरी के जूतियां घीस जाती है।" आदि कहानी का ढाँचात्मक गढण अनूठे प्रकार का है, देशकाल एवं वातावरण पूरी तरह आँचलिक है। भाषा में वहां के ही शब्द लिये गये हैं, जहाँ पर वे शब्द प्रयोग में लिये जाते है। इस तरह कहानीकार भाषा के प्रति पूर्णत सजग हैं।

निष्कर्षतः 'मांडी' कहानी समूचे दलित—वंचित वर्ग में चेतना का संचरण करती हुई स्वाभिमान, अस्मिता और आत्मबोध का संदेश देती, समूचे दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

असिस्टेंड प्रोफेसर,
एस.एन.के.पी. राजकीय महाविद्यालय,
नीमकाथाना, जिला—सीकर (राजस्थान)

महिला मुक्ति का रामबाण उपाय: आम्बेडकरवादी चिंतन

✍ डॉ.एन.एस. परमार

मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था—"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।" नारी की कहानी दुःख—दर्द भरी रही है। वह वाक्य भी आजकल बहुत चलता है—'यत्र नार्यस्तुपूज्यते रमन्ते तत्र देवता।' लोग आज यह भी कहते हैं—'नारी तू न हारी। यदि तीनों सूत्रों की जांच—पड़ताल करे तो नतीजा यह निकलता है कि नारी अबला है। उसका जीवन यातनामय रहा है। बावजूद उसके कि वह जीवन प्रदान करने वाली है। उसके आंसू पौंछने वाला कोई नहीं है। दूसरे के अंतर्गत जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। तीसरे के माने हैं कि इतनी निरंतर आपदाओं को झेलकर भी वह अडिग है, गिर—गिर कर उठ खड़े होने की कोशिश कर रही है। नारी उत्थान, नारी—मुक्ति, महिला सशक्तिकरण जैसे शब्द आज सुनाई पड़ते हैं। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कदम उठाएं जा रहे हैं। सामाजिक स्तरों पर अनेक संगठन कार्यरत हैं। उसे सती, लक्ष्मी, माता, देवी आदि अनेक विशेषणों से नवाजा जाता रहा है। परन्तु जिस रूप में उनके जीवन में परिवर्तन आना चाहिए नहीं आ पाया है। अनेक प्रकार के संशोधन हो रहे हैं। आज भारतीय समाज में स्त्रियों को लेकर कुछ परिवर्तन हुए भी हैं परन्तु उसके प्रतिशत बहुत कम है।

कहने को तो देश 15 अगस्त 1947 में आजाद हुआ लेकिन राजनीतिक रूप से हम आजाद हुए हैं। सामाजिक और आर्थिक रूप से आजाद होना अभी बाकी है। इस अवसर पर एक पंक्ति स्मृति में कौंध रही है–'आजादी मिली आधी रात को, सवेरा नहीं हुआ।' अंधेरे से उजाले की ओर संक्रमण कब होगा, किसी को पता नहीं है। परन्तु कुछ तत्त्वदर्शी होते हैं जो अपनी प्रतिभा, लगन, मेहनत, संवेदना और दूरदर्शिता के चलते अंधेरेपन को प्रकाशमय बनाने में सक्षम होते हैं।

महिलाओं की समस्याएं अनंत हैं। सती प्रथा, बाल विवाह, दूध में डुबोकर मार देने की प्रथा जो पुरानी हो गई है परन्तु इसने अपना विकृत रूप धारण कर लिया है। नारी का लालन–पालन, संस्कार, खाना–पीना, विवाह, विधवा जीवन आदि से उनके आंसू आज भी सूखे नहीं हैं। महिला अपने अपार दुःखों से ऊपर उठने के लिए भाग्य–भगवान पर विश्वास रखती है। इस स्थिति में कुछ बदलाव आया है। आज स्त्री के पढ़ने–लिखने के कारण संघर्ष में विश्वास करती हुई नजर आती है। परन्तु फिर भी उनका जीवन दुखमय और वेदनामय बना हुआ है। पहले घर की चार दीवारों में, आज बाहर भी उसका शोषण होता है। पिता, पति और बेटा उसके जीवन की डोर थामे हुए हैं। तात्पर्य यह हुआ देश आजाद हो गया पर नारी मुक्ति अभी कोसों दूर है।

नारी मुक्ति को लेकर समय–समय पर आन्दोलन हुए हैं। उसका साहस, विश्वास और संघर्ष बढ़ा है। आज जिस स्तर पर हम नारी को उन्मुक्त, आजाद और स्वतंत्र देख रहे हैं उसके मूल में भारत की आजादी कारणभूत है। केवल आजादी मिलने से ही नहीं अपितु 26 जनवरी 1949 में भारतीय संविधान के अस्तित्व में आने से यह परिवर्तन हुआ है। यदि देश स्वतंत्र है तो लोक भी स्वतंत्र होंगे। इस महान उद्देश्य की परिपूर्ति आज तक नहीं हो पायी है। साम्प्रदायिक दंगे, निर्भयाकाण्ड, ऊना काण्ड आदि इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हो रहे हैं। अर्थात् इस देश का 'तंत्र' 'जन' को नहीं समझ पाया है या सही अर्थों में लोकतंत्र, प्रजातंत्र नहीं बन पाया है। इस देश को यदि समझना है तो मुझे लगता है दो हिस्सों में बांटकर देखा जा सकता है। एक स्वाधीनता से पूर्व और स्वाधीनता के बाद का देश। स्वाधीनता से पूर्व वैदिककाल, बुद्धकाल, मनु या ब्राह्मण युग तक जाना पड़ेगा। यह देखना पडेगा कि स्त्रियों के लिए उनके क्या विचार थे। वे क्या मानते थे। हम जानते हैं कि भारत पुरुष सत्तात्मक समाज रहा है। यहा पुरुष ही सर्वेसर्वा माना गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण और पंचम जातियां। इनमें स्त्रियों का स्थान शूद्र वर्ण में रखा गया है। महिलाओं को दलित के अंतर्गत मानते हैं। यह मानने का एक कारण यह भी है कि जैसे धर्म और शास्त्रों को आधार बनाकर अनुसूचित जातियों, जन–जातियों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों के मानवीय अधिकारों का हनन हुआ वैसे ही महिलाओं को केवल महिला होने के कारण ही परापर्व से उनका शोषण हुआ। आजादी और संविधान से इस देश का नया जन्म मानना होगा। एक तरफ युगों की आदत है और दूसरी ओर नये मानव जीवन का प्रारम्भ है। पुराने जीवन में सड़ी–गली, आधारहीन, तथ्यहीन, मूल्यहीन, पुरातन पंथी विचारधारा है। दूसरी ओर समता, स्वतंत्रय, न्याय और भातृभाव वाली मानवीय सोच अर्थात् भारतीय संविधान।

राजनीतिक आजादी हमें मिल गई परन्तु सामाजिक और आर्थिक आजादी अभी दूर है। समाज में वर्ण और जाति है। वर्ण और जाति पर अर्थ का आधार है। दोनों का आधार धर्म पर है। भारतीय समाज का आधार स्तम्भ ही वर्ण–व्यवस्था है। और यह धर्म संगत है। इन तीनों शब्द समाज, अर्थ, धर्म भारतीय जनमानस में खूब चलते हैं। धर्म सार्वत्रिक है। जब भी समाज के उत्थान की बात होती है धर्म उसमें आता है। चाहे दलित, आदिवासी, पिछड़ा, अल्पसंख्यक और नारी से संबंधित क्यों न हो। ये समाज वर्ण–व्यवस्था के कारण दयनीय स्थिति में है। और वर्ण–व्यवस्था शास्त्र–संगत है, धर्म–संगत है। धर्म से हमारा तात्पर्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे कविता क्या नामक निबंध में कहते हैं–'दूसरों का कल्याण करना ही धर्म है' से

नहीं है। हम उस धर्म की बात करते हैं जो मनुष्य–मनुष्य के बीच भेदनकारी प्रवृत्ति करता है। जो जाति, वर्ण, भाषा, सम्प्रदाय, लिंग के आधार पर मनुष्य को मनुष्य मानने से इन्कार करता है। मानव को मानवीय गरिमा से वंचित रखता है। डॉ. धर्मवीर 'सम्पूर्ण क्रांति के लिए वर्ग एवं वर्ण उन्मूलन की भूमिका' नामक लेख में वर्ण से संबंधित अपने विचार करते हुए लिखते हैं–'कई हजार वर्षों से भारत में वर्णों के विरोध में महानों के स्वर गूंज रहे हैं लेकिन सभी जानते हैं कि ये मिट नहीं सके हैं....इन्हें मिटाने के अब तक अपनाए गये उपाय भी गलत थे।

क्रान्तिकारियों की कमी यह रही कि जिस किसी ने भी वर्णों का विरोध किया, चाहते हुए ही, उसने धर्म तथा दर्शन का भी विरोध किया। बचाव पक्ष वालों की कमी यह रही कि जिस किसी ने भी धर्म तथा दर्शन का पक्ष लिया, अनचाहते हुए भी उसने वर्णों का भी खुलकर पक्ष लिया। बुराई समाज की थी जबकि वेद और ईश्वर के विरोध में व्यय हुई। यही कारण है कि जिस किसी ने वर्णों का भी विरोध किया उसे ही अपना अलग धर्म अथवा पंथ चलाना पड़ा।' (जाति : एक विमर्शः अनुवाद एवं सम्पादन : डॉ. जय प्रकाश कर्दमः नव भारत प्रकाशन, नई दिल्लीः पृ. 30) स्त्रियों की समस्याओं को केवल समाज और अर्थ की दृष्टि से जांच की जाय तो परापर्व से अंधकारमय जीवनयापन करती आयी है। जिस प्रकार दलितों के लिए निर्योग्यताएं स्थापित की गई थी उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी निर्योग्यताएं थी। ज्ञान अर्जित करना उनका अधिकार नहीं था। ज्ञान पर एकाधिकार बनाये हुए थे मनुवादी। इसके सहारे से उन्होंने शासन किया। 'ऋग्वेद में पुत्री के जन्म को दुःख का खान और पुत्र को आकाश का ज्योति माना गया है। ऋग्वेद में ही नारी को मनोरंजनकारी भोग्यारूप का वर्णन है तथा नियोग प्रथा को पवित्र कर्म माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि दुनिया की सब महिलाएं शूद्र है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में नारी की स्थिति को लेकर काफी विरोधाभास है। इस्लाम में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। कुरान शरीफ के आयत (1–4–11) में सम्पत्ति से संदर्भित मामले में स्पष्ट लिखा है कि 'एक मर्द का हिस्सा बराबर है दो औरत का हिस्सा। भारत में महिलाओं की बहुत दयनीय अवस्था थी। मनुस्मृति महिलाओं को किसी भी तरह की आजादी नहीं देती थी।' (https/samaybuddha.com/2015/03/08/ hindu-code-billaambedkar-for-women-freedom-page-5) सवर्ण महिलाओं की अपेक्षा दलित महिलाओं का तो दोहरा शोषण होता है। एक वह नारी है इसलिए और दूसरा इसलिए कि वह दलित है।

आजादी के इतने बरसों में इन नारियों की स्थिति कैसी है देखिए–'बरसों से चले आ रहे पितृसत्तात्मक समाज में आधी दुनिया के मानवाधिकारों पर एक नजर डालते हैं। बड़े–बड़े महानगरों को चौंधियाती रोशनी से हटकर बसे झुग्गीवाले इलाकों में महिलाओं के लिए पेयजल और शौच तक की उचित व्यवस्था नहीं है, शिक्षा और स्वास्थ्य तो दूर की बातें हैं। भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, यौन–शोषण, शारीरिक उत्पीड़न, मानसिक प्रताड़ना और बलात्कार जैसे दलितों से घिरी आधी दुनिया मानवाधिकारों की जरूरत को रेखांकित करते–करते अक्सर थक–सी जाती है। 73वें और 74वें संविधान द्वारा पंचायती राज की प्रणाली लागू की गई थी ताकि हमारे यहां लोकतंत्र अपनी जड़ों की गहराई तक पहुंच सके। महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी इन संशोधितों के माध्यम से की गई थी। महिलाओं ने कई आशाजनक परिणाम भी दिये लेकिन यह प्रगति एक समान और समतापूर्वक नहीं रह सकी। राजस्थान में एक महिला सरपंच को राष्ट्रध्वज फहराने से मात्र इसलिए रोक दिया जाता है, कि वह तथाकथित नीची जाति से है। ऐसी चीजें क्या इस बात की मापक नहीं कि मानवाधिकार और मानवीय गरिमा को हम कहां तक अक्षुण्ण बनाये रख पाए है।' (दलित मानवाधिकार : रूपचन्द गौतम : कान्ती पब्लिकेशन्स : दिल्ली पृ. 188) सवाल आखिर यह है कि इतना सब कुछ करने के बाद भी जिस प्रकार परिणाम निकलना चाहिए, नहीं आ पा रहा है। इसका मतलब यह हुआ कि

हम कहीं न कहीं जाने अनजाने गलती कर रहे हैं। डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर सम्पूर्ण मानव जीवन को मानवीय गरिमा के साथ जीवन प्रदान करने वाली सोच रखते थे। दुर्भाग्य इस बात का है कि उनके दर्शन को हम समझ नहीं पाये। न तब समझ पाये न आज।

सड़ी–गली मान्यताओं, ढोंग–ढकोसलों, ईश्वर, भाग्य, पाप–पुण्य, स्वर्ग–नर्क, इहलोक–परलोक, पर विश्वास करके शास्त्र–संगत मत–मतांतरों को मानते रहे। हमारा कल्याण किसमें है यह हम नहीं समझ पाये। बाबा साहब आम्बेडकर इस बात को बहुत पहले समझ गये थे। संविधान में उन्होंने समता को आधार बनाया। 'समता' अर्थात् जो अधिकार पुरुष को है, सारे उनको मिलने चाहिए। स्वतंत्रता अर्थात् एक मानव के रूप में स्वतंत्र अस्तित्व। स्त्री सदियों से पराश्रित है। बाबा साहब सम्पूर्ण भारतीय समाज का हित चाहते थे। "अस्पृश्यों के पश्चात वह हिन्दू नारी को ही सर्वाधिक उपेक्षित व अपमानित" तथा प्रताड़ित जन समझते थे। जिस प्रकार अस्पृश्यों और शूद्रों के लिए कर्तव्यों की कोई कमी नहीं थी और अधिकारों का नाम निशान नहीं था, उसी प्रकार हिन्दू नारी भी स्मृतिकारों और शास्त्रों के रचयिताओं की पुरुष समर्थक एक पक्षीय दृष्टि का शिकार हुई थी। दायित्वों के बोझ तले उसका समस्त जीवन होम जाता था, पर दायित्वों की पूर्ति नहीं हो पाती थी। इसलिए हिन्दू कोड विधेयक के आधार पर वह न केवल भारतीय नारी विशेषकर हिन्दू नारी पर सदियों से चले आ रहे पुरुष के एकाधिकार को समाप्त कर देना चाहते थे, अपितु हिन्दू नारी को एक स्वतंत्र अस्तित्व भी प्रदान करना चाहते थे।" (हिन्दू नारी के उत्थान प्रयास : लेख : युगपुरुष बाबा साहेब डॉ. भीम राव आम्बेडकर–संघर्ष गाथा : हिमाशुराय : समत प्रकाशन शाहदरा, दिल्ली : पृ. 203)

भारतीय संविधान से दलितों के बाद यदि कोई और वर्ग लाभान्वित हुआ है तो वह है इस देश की नारी। घर की चार दीवारी लांघ कर आज न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायक और संसद तथा मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रधानमंत्री पद तक पहुंच पाई है। प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रही है। गीता और बबीता जैसी महिलाओं ने देश का नाम रोशन किया है। इस आशातीत और आश्चर्यजनक प्रगति का श्रेय भारतीय संविधान को जाता है। यदि संविधान में ऐसे प्रावधान नहीं होते तो भारतीय नारी की स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं आता। भारतीय नारी डॉ. आम्बेडकर को, अपने सही उद्धारक के प्रति संवेदना–सद्भाव नहीं रखती जितना रखना चाहिए। उसका कारण यह भी है कि वह दलित वर्ग से संबंधित थे। एक उदाहरण डॉ. श्यौराजसिंह बैचेन की पुस्तक 'हिन्दी की दलित पत्रकारिता पर आम्बेडकर का प्रभाव' जो समता प्रकाशन, शाहदरा से छपी है–में देखा जा सकता है। "महाड सत्याग्रह के समय आन्दोलन में ब्राह्मण महिलाएं भी शामिल हुई थी जिनका उल्लेख व प्रशंसा डॉ. अम्बेडकर ने अपनी कलम से दर्ज की है। महाड में जब दलित, स्त्रियों, बच्चों पर सनातनी हिन्दुओं ने लाठी चार्ज किया तब दुनियाभर में इस प्रकरण से बाबत गैरदलितों में व्याप्त असहिष्णुता की कटु आलोचना की गई। आम्बेडकर उस समय बहिष्कृत भारत के सम्पादक थे। ब भा में उन्होंने लिखा है–"देवताओं के उपरांत यदि कोई पूजनीय है तो वे महिलाएं हैं परन्तु फिर भी महाड सत्याग्रह के समय अस्पृश्य स्त्रियों को सवर्णों ने बेइज्जत करने का असीम कुप्रयास किए।" कुटुम्ब नियोजन का विचार 1938 में रखा था। 'स्त्री पक्षधरता की वैचारिक परिकल्पना मुख्यतः हिन्दू कोड बिल में मुखर हुई है। जिसमें उन्होंने न केवल दलित महिलाओं को बल्कि सम्पूर्ण हिन्दू स्त्रियों के अधिकारों की रचनात्मक वकालत की। हिन्दू कोड बिल को हम हिन्दू स्त्री मुक्ति का घोषणा पत्र कह सकते है।" (हिन्दी की दलित पत्रकारिता पर आम्बेडकर का प्रभाव : डॉ. श्यौराजसिंह बैचेन : समता प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली : पृ. 225) स्त्री संबंधी बाबा साहब के विचार अति उत्तम है। स्त्रियों में जागृति के लिए उन्होंने 1930 में नागपुर महिला परिषद् में कहा–दलित महिलाओं में शिक्षा, सफाई, पहनावा आदि में दक्षता लाने की अपील की। 'डॉ. आम्बेडकर के भाषणों में स्त्री मुक्ति, पुरुषों के साथ उनकी समानता की चिन्ता व्यक्त हुई है। "हिन्दू कोड बिल" को कानून बनवाने में आम्बेडकर ने पूरी शक्ति लगाई, असफल

होने पर मंत्रिमण्डल से त्याग–पत्र दे दिया किन्तु महिला संगठनों तक ने उनकी इस बुनियादी भूमिका का स्मरण तक नहीं किया।' (मधुलिमये–डॉ. अम्बेडकर चिंतन, पृ. 89)

हिन्दू संस्कृति का मूलाधार वर्णाश्रम है। तत्कालीन सत्ताधारियों को हिन्दू कोड बिल में आपत्ति जताई। 'हिन्दू कोड बिल' में आपत्तिजनक क्या था? स्त्रियों को तलाक देने का अधिकार, पिता की सम्पत्ति में पुत्रों के समान अधिकार? सवाल यह है आखिर कौन शक्तियां है जो महिलाओं को अपने मानवीय अधिकार के लिए रोकती है? 'हिन्दू व्यवस्था के मानसिक कर्ताधर्ता ऋषि–मुनि शंकराचार्य बताये जाते हैं। शास्त्रों, ग्रन्थों को समाज नियामक मानते हैं किन्तु स्त्री विषयक प्रश्नों पर उनके विचारों की जांच करे तो घोर अनुदारता व कट्टरता देखने को मिलती है।' (हिन्दी की दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव : डॉ. श्यौराजसिंह बैचेन : पृ. 226) हिन्दू कोड बिल पर शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती की प्रतिक्रिया देखें–'हिन्दू कोड बिल' हमारे वर्ण और आश्रम दोनों सिद्धांतों पर आक्रमण करने वाला है। अतः यह बिल हिन्दू सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक जीवन को मटियामेट करने वाला है।' (रत्नाकर गणवीर हिन्दू कोड बिल तथा उसके उद्देश्य, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली–110049) जिस वर्ण व्यवस्था के कारण भारतीय समाज एक नहीं हो पाया है। महिला समस्याएँ आजादी के इतने बरसों में कम नहीं हो पायी है। आज नारी सही अर्थों में शक्ति बनना चाहती है परन्तु अभी मुक्ति मिल नहीं पाई है। वर्णवादी मानसिकता लेकर आज के जमाने में आगे नहीं बढ़ा जा सकता। अछूत वर्ग में जन्म लेने के कारण जीवन पर्यन्त अस्पृश्यता व अपमान के कड़ुए घूंट पीने पड़े। जिस महापुरुष–महामानव भुक्तभोगी रहा हो वह दूसरों को कैसे भूल सकता है? वस्तुतः बाबा साहब ने समग्र मानव समुदाय के लिए सोचा और उसी के अनुरूप कार्य भी किया।

आज महिलाओं को उचित अवसर मिलने पर एक तरफ प्रगति के रास्ते पर अग्रसर हुई है परन्तु दूसरी ओर उसका श्रेय उसी पुरातन मान्यताओं–परम्पराओं, ढकोसलों–अंधविश्वासों–पूजा–व्रत–तीर्थ यात्रा आदि अनेक को देती है। परन्तु संविधान प्रदत्त अधिकारों के कारण उसे ज्ञान (शिक्षा) का अवसर मिला। परिणामस्वरूप उनके ज्ञानचक्षु खुले। बिना शिक्षा उनका जीवन अंधकारमय था। डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर ने इसीलिए सूत्र दिया होगा। शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था –

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर ये विचारे, ये समस्याएं सभी।

देश का विगत इतिहास दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों एवं महिलाओं के लिए अति पीड़ादायक रहा है। इस पीड़ा से मुक्ति कैसे मिल सकती है यह बहुत ही विचारणीय और गंभीर प्रश्न है। आम्बेडकर के अनुसार 'हिन्दू स्त्री को आजादी बहुत कम और गुलामी बहुत ज्यादा है।' इस सामाजिक, आर्थिक गुलामी की जंजीरों से मुक्त होने का रास्ता शिक्षा से होता हुआ गुजरता है। ज्योतिराव फुले की पंक्तियां बहुत ही उपयुक्त है–

विद्या बिना मति गेली, मति बिना नीति गेली, नीति बिना वित्त गेले, वित्त बिना शूद्र खचले, इनके अनर्थ एक अविद्या ने केले। 'एक सधै सौ सधै' वाली कहावत यहां चरितार्थ होती है। डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन की पंक्तियां भी हमारे विगत जीवन की पीड़ाओं को भविष्यत बेहतर जीवन के लिए याद रखना जरूरी होता है। देखिए–'शिक्षा के बिन कौम कोई आजाद नहीं होती, जैसे कोई इमारत बेबुनियाद नहीं होती। उनका मस्तक मिल खतरे में पड़ जाता है, जिसको अपनी दुःख भरी कहानी याद नहीं होती।' महिला मुक्ति का रामबाण उपचार हमारी दृष्टि से आम्बेडकरवादी चिंतन है। आजादी के इतने बरसों में आज तक हम सामाजिक और आर्थिक रूप में समुन्नत नहीं हो पाये हैं। कई समस्याएं मुंहफाड़ मानवता को ग्रसित होने को लालायित है। ऐसे में महामानव, भारत रत्न डॉ. भीमराव आम्बेडकर का चिंतन हमें सही राह दिखा सकता है।

हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ
बड़ौदा – 390002 (वड़ोदरा)
मोबा. 09428066009

क्या कारण है कि दलित, पिछड़े बहुसंख्यक होकर भी सत्ता से दूर हैं?

✍ बी.एल. परमार

भारत में दलित, पिछड़ों की जनसंख्या सबसे अधिक है। किन्तु इसके बाद भी यह वर्ग सदियों से शूद्र कहला कर अन्याय, अत्याचार, छुआछूत, घृणा का शिकार रहा है। आजादी के बाद देश में प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली आई। किन्तु बहुजन अत्याचार से मुक्त नहीं हुए। दलित, पिछड़े वर्ग को बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान में विशेष प्रावधान कर आरक्षण के माध्यम से शिक्षा, राजनीति व नौकरी में अन्य समाज की बराबरी पर लाने के लिए कई सुविधाएं प्रदान की। किन्तु आर्थिक तंगी के कारण कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने नारा दिया था कि शिक्षित बनो, संगठित रहो और अपने अधिकार के लिए संघर्ष करो। इस नारे के आधार पर दलित, पिछड़े कुछ शिक्षित जरूर हुए किन्तु आज तक संगठित हो संघर्ष नहीं कर सके। जिसके कारण बहुसंख्यक होकर भी सत्ता से दूर हैं।

दलित व पिछड़े वर्ग के कुछ चुनिंदा गणमान्य नेता पंडित के पास पहुँचे। पूछा पंडितजी, हम संख्या बल में सबसे अधिक हैं। कतार में लग मतदान भी हम सबसे अधिक करते हैं। किन्तु सत्ता से दूर हैं। आप साढ़े तीन प्रतिशत होकर भी सत्ता और नौकरी में सबसे अधिक 90 प्रतिशत पदों पर विराजमान हैं। ऐसा क्यों, हमारी कुण्डली में क्या दोष है जरा देखिए तो?

पंडित ने कहा–देखिए यजमान यह अति गोपनीय रहस्य है। मैं तुम्हें नहीं बता सकता। दोनों वर्ग के नेताओं ने हाथ जोड़ कहा–महाराज हम हजारों वर्षों से अन्याय, अत्याचार, अनादर, अपमान सहते आए हैं। अछूत कह कर हमसे घृणा करते हैं। आज भी हम जातीय सोच व शोषण के शिकार हैं।

पंडित ने कहा–देखिए मैं उस अति गोपनीय राज को बता रहा हूँ। जिसे आज तक किसी को नहीं बताया है। आप मेरा नाम किसी को मत बताना। हमारे पूर्वज ज्ञानी, विद्वान पंडितों ने आपकी बुद्धि का हरण कर रखा है। आप में सोचने समझने की क्षमता नहीं रहने दी है। आपको अज्ञानी, विवेकहीन, अशिक्षित बना रखा है।

दोनों वर्ग के नेताओं ने कहा–पंडितजी हमें किस प्रकार से विवेकहीन, अज्ञानी बना रखा विस्तार से बताने का कष्ट कीजिए।

पंडित ने कहा–ध्यान लगा के सुनिए। आपको हमारे पूर्वजों ने सदियों से गुलाम बनाए रखा है। आपको शिक्षा से वंचित रखने व शिक्षा लेने पर दण्ड का प्रावधान मनुस्मृति तथा अन्य शास्त्रों में विस्तार से वर्णित है। देखिए जब आपका मकान बनता है। पैसा आप खर्च करते हैं। किंतु नींव खोदने का मुहूर्त पंडित देते हैं। मकान बनकर तैयार हो जाता, किंतु प्रवेश पंडित कराते। जब आपके यहा पुत्र, पुत्री का जन्म होता है नाम पंडित रखते हैं। उनकी जन्म कुण्डली पंडित बनाते हैं। जब पुत्र–पुत्री का विवाह होता है लग्न पंडित देते हैं। फेरे पंडित करते हैं। जब गौना होता है मुहूर्त पंडित देते हैं। जब गोद भराई होती मुहूर्त पंडित देते हैं। दुकान, व्यवसाय, उद्योग का मुहूर्त पंडित देते। तीर्थ यात्रा जाते मुहूर्त पंडित देते। मंदिरों का चढ़ावा पंडित लेते। मृत्यु के पूर्व गीता पंडित सुनाते। मृत्यु के बाद दाह संस्कार पंडित कराते। मृत्यु पश्चात्, गरूढ़ पुराण पंडित सुनाते। घाटा, क्रिया–कर्म पंडित कराते। हरिद्वार में पिण्डदान व मोक्ष पंडित दिलाते। घर में प्रेतात्मा से शान्ति पंडित दिलाते। तुम्हारे गत्या, ओकत्या पूर्वज को गति–मुक्ति पंडित दिलाते। क्लेश विघ्न हरने को शान्ति पाठ पंडित करते। आपके लिए महामृत्युंजय का जाप पंडित करते। आपके मेहमान को तिलक पंडित लगाते। किसी भी शुभ कार्य का मुहूर्त पंडित देते। गृहशांति, आत्मशांति, सर्वशांति के पाठ पंडित करते। आपके लिए यज्ञ, हवन, पूजा–पाठ पंडित

करते। शनि, मंगल, राहु, केतु से शांति पंडित दिलाते। कुआ, तालाब खोदने का स्थान व पानी पंडित बताते। कुआ बांधने का मुहूर्त पंडित देते। मंदिर बना के मूर्ति तुम तराशते। किंतु प्राण–प्रतिष्ठा व पूजा पंडित करते। वाहन तुम लाते पूजा पंडित करते। आपको गीता, भागवत, रामायण कथा पंडित सुनाते। श्राद्ध तर्पण पंडित कराते। देखा जाए तो तुम्हारे जीवन की लगाम पंडित के हाथ में है। 5000 वर्ष से तुम्हें शिक्षा से वंचित कर रखा है। दलित और पिछड़े दोनों शूद्र है किन्तु पंडित ने दोनों के बीच ऊँच–नीच की गहरी दरार डाल रखी है, ताकि दोनों संगठित नहीं हो सके। एक–दूसरे से घृणा कर दूर रहे।

पंडित ने कहा–बताओ आप मूर्ख, बुद्धिमान, विवेकहीन है कि नहीं। आप गुलामी से मुक्त नहीं हो सकते। पंडित जो भी क्रिया–कर्म करते हैं उसकी दान दक्षिणा भेंट पूजा भरपूर लेते हैं। तुम्हें मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। किन्तु तुमसे दान–दक्षिणा, चढ़ावा सीदा, पेट्या, भेंट ले लेते हैं। तुमसे अछूत काज करवा कर अछूत भी कहते हैं। समानता का दर्जा नहीं देते हैं। हिन्दू–हिन्दू भाई–भाई कह कर भी तुम्हें पास नहीं फटकने देते हैं। तैंतीस करोड़ देवी–देवता का आविष्कार करके तुम्हें इसमें व्यस्त कर दिया है। ताकि पंडितों की आय बनी रहे। जाति, धर्म, कर्मकाण्ड, पूजा–पाठ, लोक, परलोक, स्वर्ग–नरक, पाप–पुण्य, भाग्य–दुर्भाग्य, पुनर्जन्म में बांध रखा है। ताकि आप इससे आगे नहीं सोच सको। आरक्षित वर्ग के देश भर से 132 सांसद एवं 1050 विधायक हैं। किन्तु इस वर्ग की समस्या हल करने के लिए इन्हें एक मंच पर संगठित नहीं होने दिया है। अपनी–अपनी पार्टी के वफादार सेवक बना रखें हैं। ताकि आपस में संगठित हो सत्ता तक नहीं पहुँच सके। अजा वर्ग का राष्ट्रपति बना दिया है। किन्तु उसे ब्रह्मा एवं पुरी के मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया। ताकि राष्ट्रपति को अपनी जातिगत औकात का पता रहे। वे यह न समझ ले कि मैं देश का प्रथम नागरिक बन सर्वेसर्वा हो गया हूँ। दलित, पिछड़ों को भ्रमित कर दास बनाने के लिए अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक हथकण्डें हैं। ताकि वे संगठित हो सत्ता तक नहीं पहुँच सके।

पंडित की बात सुनकर दलित, पिछड़ों की आँखें खुल जाना चाहिए कि वे संख्या बल में सबसे अधिक होकर भी सत्ता से दूर क्यों हैं? जब तक दलित, पिछड़े मनुवाद के गुलाम रहेंगे संगठित हो अधिकार के लिए संघर्ष नहीं करेंगे तब तक सत्ता सिंहासन तक नहीं पहुँच सकेंगे।

13/37, भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला उज्जैन (म.प्र.) मोबा. 8989702048

कैसे हो, भारत में आमूल चूल क्रान्ति

डॉ. रणजीत

आमूल चूल क्रान्ति शब्द सुनते ही अनेक लोगों के दिमाग में एक रक्त–रंजित सत्ता–परिवर्तन की कल्पना उभरती है। पर मैं इस लेख के प्रारम्भ में ही यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि नाभिकीय अस्त्रों के इस युग में जब पृथ्वी पर उसे दस बार नष्ट करने लायक ये अस्त्र मौजूद हैं, भारत जैसे इस विशाल देश में, एक रक्त रंजित क्रान्ति केवल संभव नहीं है, वह काम्य भी नहीं है। काम्य वह केवल उन लोगों के लिए हो सकती है, जो सत्ता, केवल सत्ता के लिए, अपने आधिपत्य के लिए चाहते हों । उन लोगोंके लिए कतई नहीं, जो मनुष्य और मनुष्य के बीच की तमाम विषमताएं समाप्त कर, वास्तव में एक मानवीय समाज की रचना के लिए उसका उपयोग करना चाहते हों। अब तक की सभी सशस्त्र क्रान्तियों का इतिहास गवाह है कि खूनी संघर्षों के दौरों ने उनके अग्रदूतों का ऐसा राक्षसीकरण कर दिया, कि क्रान्ति के मूल उद्देश्य पीछे रह गये और क्रान्तिकारी शक्तियों या व्यक्तियों के बीच का सत्ता संघर्ष ही मुख्य हो गया और खून जितना क्रान्ति के दौरान बहा, उससे कई गुना क्राति के बाद उसकी रक्षा के नाम पर बहाया गया। इस इतिहास से सबक लेकर आगे की ओर दृष्टि डाली जाय तो इस सत्य को

हृदयंगम करने में देर नहीं लगनी चाहिए कि सोवियत समाजवाद के भरभरा कर ढह जाने और चीनी साम्यवाद के पूंजीवादी व्यवस्था के सामने स्वैच्छिक आत्म–समर्पण के बाद इस तरह के समाजवाद या साम्यवाद का कोई भविष्य नहीं है। इस सच्चाई को भारत के क्रान्तिवादी–वामपंथी जितनी जल्दी जान और मान लेंगे, उनका पुनरुद्धार और पुनर्जीवन उतना ही सहज, सुगम और सत्वर संभव होगा। भारत के क्रान्तिकारियों को अब नये सिरे से स्वप्निल साम्यवादी प्रयोगों से लेकर फ्रांसीसी, रूसी और चीनी क्रांति की सर्वहारा तानाशाहियों, पोलपोटी नरसंहारों और चाउसेस्की के सम्राटीकरण तक की परिणितियों तक के इतिहास को पूरी तरह से खंगालना चाहिए और उससे सबक लेना चाहिए।

मेरे विचार से पूंजीवाद द्वारा आविष्कृत और अंगीकृत उद्योगीकरण की भारी तकनीकों पर रोक लगाते हुए, अपनी विशाल बेरोजगार आबादी के लिए उपयुक्त मानव–केन्द्रित तकनीकों के विकास एवं अनुप्रयोग से एक विक्रेंदित ढंग की पूरी तरह से जनतांत्रिक और समतावादी व्यवस्था की रचना की कोशिश, जन आंदोलनों के माध्यम से करना, भारत में बुनियादी परिवर्तन का एक रास्ता हो सकता है। इन जनान्दोलनों में हमें स्त्रियों, अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों और मुख्यधारा के हाशिये पर स्थित अंतिम लोगों को शामिल करना होगा। सबसे पहले तो आनुपातिक चुनाव पद्धति लागू करने के लिए तथा व्यापक चुनाव–सुधारों के लिए ही आन्दोलन करना होगा।

कविता की शब्दावली में कहूँ तो हमें मानव जाति की पलकों पर चिरकाल से पलते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' के उस सपने को साकार करने के लिए लड़ना है, जिसमें

पूरी दुनिया एक परिवार हो
उसकी एक चुनी हुई संसद हो, संघीय सरकार हो
सब राष्ट्रीय सरकारें प्रान्तीय सरकारों में बदल जी जांय
जिनके पास न तो सेनाएं हो, न हथियार हों
एक ऐसी दुनिया बने जिसमें
न तो कोई भूखा हो, न बेरोजगार हो
फिर भी हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का
आलोचना का, आन्दोलन का अधिकार हो
अपने जीवन पर, मरण पर
अपनी मति गति नियति पर पूरा अस्तित्व हो
हर गाँव, कस्बे, नगर की
अपनी एक चुनी हुई स्वायत्त सरकार हो
लेकिन गाँव से लेकर विश्व तक की सरकारों के पास
कम से कम अधिकार हों
ताकि वे धीरे–धीरे बेजीनीत होकर
झर जांय
टूटें, गिरे और मर जांय।

अर्थात् हमें मार्क्स के वर्ग ही नहीं, अन्ततः प्रूदों और कोपटिकिन के राज्यहीन समाज के लिए और गाँधी के ग्राम स्वराज के लिए एक साथ लड़ना है और उस लड़ाई में अपनी आबादी के सभी दलित तबकों को शामिल करना है। हमें स्पष्ट घोषित कर देना चाहिये कि हम लोगों की आय के बीच के अन्तर को जो आज एक और एक करोड़ से भी अधिक के अनुपात में है, एक और दस के अनुपात में ले आना चाहते हैं–हम बीस प्रतिशत आनन्द द्वारा उपभोग किये जा रहे, ऐश और ऐश्वर्य के सभी दिखावटी साधनों का उत्पादन और आयात तब तक रोक देना चाहते हैं, जब तक कि शेष अस्सी प्रतिशत आबादी की रोटी, पानी, कपड़े, मकान, चिकित्सा औ रोजगार की ऐसी व्यवस्था नहीं कर लेते कि वह भी मानवीय गरिमा से परिपूर्ण जीवन जी पायें और यह सब हम किसी प्रकार की तानाशाही के माध्यम से नहीं जन आन्दोलनों से और उनसे उत्पन्न जनता की पूरी तरह कानूनी ढंग से चुनी हुई सरकार के बहुमत से लिये गये वैध निर्णयों के माध्यम से करेंगे।

इस कार्य के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि देश के कोने–कोने में चल रहे दलितों, दमितों, आदिवासियों, स्त्रियों और पर्यावरण के व्यापक विनाश तथा अन्धे जन विरोधी उद्योगीकरण के विस्थापितों के सभी स्वयं स्फूर्त जनान्दोलनों का और तमाम वामपंथी

पार्टियों के राजनीतिकर्मियों, बुद्धिजीवियों और संस्कृतिकर्मियों का एक विशाल समन्वय स्थापित हो यानी एक संयुक्त या एकीकृत समाजवादी पार्टी का निर्माण हो, जिसमें उसके सभी घटक अपनी छोटी–छोटी इसनाएं और अन्मिताएं विलीन करें और वह पार्टी युग सुधार के एक ऐसे कार्यक्रम के लिए संघर्ष करे कि हमारी निर्वाचन प्रणाली धन, जाति और अपराधी तत्वों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त होकर जन आकांक्षाओं के सच्चे ईमानदार और कर्मठ प्रतिनिधियों को जनप्रतिनिधियों के रूप में चुन सके। यह एकीकृत समाजवादी या समतावादी दल कम से कम और अधिक से अधिक आमदनी की सीमा बाँधे, एक परिवार एक मकान और कृषि भूमि सिर्फ कृषकों के नियम लागू करने भूमि और आवासीय सम्पत्ति की सीमा निश्चित करे और सारी अतिरिक्त सम्पत्ति का समाजीकरण–राष्ट्रीयकरण नहीं करते हुए उसका एक गांव व मुहल्ले और नगर के स्तर पर अब तक उससे वंचित परिवारों में सम्यक् वितरण करें, देश में स्थित बहुतराष्ट्रीय निगमों और विदेशियों की सम्पत्ति को भी इस सीमाबन्दी और वितरण से कोई छूट न दी जाए और अपनी इन समतावादी नीतियों के आधार पर एक प्रबल जन आंदोलन करवाकर देश की केन्द्रीय सत्ता को अपने हाथ में ले और फिर उसको पूरे जनतांत्रिक और कानूनी ढंग से विकेन्द्रित छोटी इकाइयों – ग्राम सभा मुहल्ला समिति, नगर समिति और जिला परिषदों, फैक्ट्री समितियों, कार्यालय समितियों, स्कूल कॉलेज समितियों, अस्पताल समितियों आदि को हस्तांतरित करे और सभी विकेन्द्रित छोटी इकाइयां उनमें काम करने वाले मजदूरों, कार्मिकों, छात्रों, अध्यापकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों आदि के द्वारा ही बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के जनवादी तरीके से गठित की जा सके, इसका पूरा ध्यान इस एकीकृत समतावादी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता रखें ताकि नई समतावादी व्यवस्था का नियंत्रण किसी प्रबंधक वर्ग या तानाशाही पार्टी के हाथों में उस तरह से न जा सके जिस तरह से सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों में चला गया था।

मेरा गहरा विश्वास है और अब तक के समता–स्थापना के सभी मानवीय प्रयत्नों, सभी समाजवादी, क्रान्तियों के इतिहास से गंभीरता से गुजरता हुआ प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि सच्चे जनतंत्र और सच्चे समाजवाद में न केवल कोई अन्तरर्विरोध नहीं है, बल्कि सच्चे और परिपूर्ण जनतंत्र के बिना कोई सच्चा और सम्पूर्ण समाजवाद स्थापित किया ही नहीं जा सकता। एक स्वस्थ प्रगतिशील मानवीय व्यवस्था के लिए पहली महान मानवीय क्रान्ति–फ्रांसीसी क्रान्ति के तीनों आदर्श समान रूप से महत्वपूर्ण है। समता, स्वतंत्रता और भाईचारा। किसी के नाम पर दूसरे की उपेक्षा करके अमेरिकी पूंजीवादी और सोवियत समाजवादी जैसी विकलांग और बीमार समाज व्यवस्थाएं ही स्थापित की जा सकती है, कोई स्वस्थ मानवीय व्यवस्था नहीं।

एक बार समता स्वतंत्रता और भाईचारे पर आधारित समाज व्यवस्था की नींव डालने के बाद उसे बचाये और बनाये रखने के लिए यह भी आवश्यक होगा कि उच्चतर नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से सम्पृक्त सार्वभौम शिक्षा की भी व्यवस्था की जाय–क्योंकि सम्यक् मानवीय चरित्र–प्रबंधन के बिना समाज व्यवस्था प्रबंधन के फिर से पतित हो जाने का खतरा बना रहेगा। इस कार्य के लिए शिक्षा के अतिरिक्त विकसित होते हुए व वंशाणु विज्ञान की भी मदद ली जा सकती है। एकीकृत समाजवादी पाटी वैज्ञानिकों को ऐसे अनुसंधानों के लिए प्रेरित कर सकती है जो मनुष्य को उसके अतिशय काम, क्रोध, लोभ, अहंकार और आक्रामकता से मुक्त कर उसे एक संतुलित और स्वस्थ मनुष्य बना सकें ताकि अगली सहस्राब्दियों में मानव जाति एक वैश्विक बंधुत्व की डोर में बधी हुई समता और स्वतंत्रता का पूरा आनन्द लेते हुए एक आदर्श मानवीय जीवन की राह पर निरन्तर आगे बढ़ती रह सके।

2094, शोभा डहलिया,
बेलनदूर, बैंगलोर–560103
मोबा. 9108792360

कविताएँ

बोधि के फूल

दामोदर मोरे

मेरे मस्तिष्क में
शम्बूक दौड़ रहा है।
मेरे अंग–अंग में
एकलव्य सुलग रहा है।
मेरे कंठ में
बलिराजा गर्जना कर रहा है।
मेरी आँखें
अर्ध निमीलित हो रही है
मेरी धमनियों में
रोहिणी बह रही है।
मेरी निगाहें
तृष्णा पर तीर चला रही है।
मेरे मन की सरिता
बह रही बुद्ध गया से सारनाथ तक।
और बह रही है
सारनाथ से मुझ तक।
मेरी काया में खिल रहे है
बोधि फूल।
मेरे चित्त का सागर
बन गया है निर्मल।
और उसमें खिल रहा है
करुणा का कमल।

104, टॉवर ए, मेटो रेसिडेंसी,
मेटो जंक्शन मॉल, नेतिवली
कल्याण – 421306 (पूर्व)
मोबा. 9867330533

आम आदमी जाग चुका है

डॉ. धीरजभाई वणकर

वे सब कुछ देखते, फिर भी
कुछ नहीं सुनते
कुछ नहीं बोलते
सिर्फ तमाशे देखते रहते
वे बहरे हो गये है
कितना भी चिल्लाओं
अत्याचार के खिलाफ
उन्हें कुर्सी के अलावा
कुछ भी दिखाई नहीं देता
देश के किस कोने में
कब, क्यों कितनी बार
किसकी कत्ल की जा रही है
किसकी जमीन हड़प ली जा रही है
भला वे तो...
बेशर्म घूम रहे है
अपनी–अपनी डफली बजाते।
इस मुखौटाधारी की अब नहीं चलेगी
धूर्तता भरी चालों के खिलाफ
आम आदमी जाग चुका है...
अत्याचार को अलविदा करने
अधिकार को छीन लेने.....
यत्र तत्र सर्वत्र लोग हो स्वतंत्र
ना कोई बड़ा ना कोई छोटा
समरसतामूलक समाज की स्थापना हेतु
लावा बनकर शोषकों को भस्म करने।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
जी.एल.एस. कॉलेज फॉर गर्ल्स, दीनबाई टॉवर केसामने,
लाल दरवाजा – अहमदाबाद (गुजरात) पिन. – 380001
मो. 09638437011

भरत मिलन की आशा !

मथुरानाथ सिंह

को आया किस उदरदरी से
बाहर सबसे आगे
पीछे को आया किस दरी से
बनकर यहाँ अभागे।

कौन द्वार से आगा अगड़ी
कौन द्वार से पिछड़ी
को आया फिर कौन द्वार से
बांध जात की पगड़ी ?

है कहीं क्या तन पर प्यारे
जात–पात की रेखा
मानव तन में ही तो प्यारे
नर–नारी को देखा।

लाख चौरासी में मानव की
है ना, एक ही जाति
नर–नारी को छोड़ कहो न
नर की क्या उपजाति?

एक दरी से निकले हम सब
हैं ना सभी सहोदर
भले सूर्यपुत्र हो कोई
या कोई लम्बोदर!

या कोई का कद लम्बा हो
या कोई का बौना
पर आये सब एक द्वार से
लेकर रूप सलौना।

मानव तन की है ना प्यारे
नर–नारी की काया
एक चमन के सुमन सभी हैं
सब में प्रभु अंश समाया।

वर्ण/जाति का भेद लगाकर
किसने किया तमाशा
बैर–फूट के भावों का
किसने फेंका पाशा?

जात–पात के भेद भाव ने
तोड़ा भाईचारा
अगड़ी/पिछड़ी कर भाई ने
भाई को किया किनारा।

पिछड़ी कह त्रिशंकु को
नभ में रे लटकाया
और दाव पर शम्बूक का भी
त्वरित सिर कटवाया

पक्षपात का सौदा करके
लिया कवच आ कुण्डल
छलिया बामन वेश बनाकर
'बली' का किया रे मुंडन।

दिया ना उसे पाताल भेजकर
लौट नहीं वह आयेगा
महा मही माता से कह क्या
सुख–सम्पदा पायेगा?

वंश बदलकर ही तो प्यारे
बृन्दा को ना छोड़ा
संग–साथ में शयन करके
सतीत्व उसका तोड़ा।

सच बोलने वाला सच कह
था क्या वह अपराधी
लगा दिया ना उसके घर में
विघ्न–बाधा की ब्याधी।

पिछड़ा जानकर ही प्यारे
अंगूठा से कटवायी
पाप कर्म पर भी प्यारे
सोच क्यों नहीं आयी?

राज मुकुट दे सर पर प्रभु ने
किसको जग में भेजा
और किसे कहा लड़ने को
आयुध भी संग ले जा?

रहे ना उल्लू सीधा करते
कभी डरा–धमकाकर
और किसी को रहा न करते
अपनाकर फुसलाकर।

कर दिया ना फुआ का भी
अकबर के संग सगाई
और हिडम्बा भी तो प्यारे
भीमसेन घर आयी।

सत्यवती संग शान्तनु की
देखी यहाँ सगाई
और शूद्रा संग शाल्विन ने
शादी यहाँ रचाई।

गुरु पत्नी संग साथ में
किया न चन्द्र ने लीला
और इन्द्र ने अहिल्या के संग
किया तेज को ढीला!

शवरी के जूठे बेर को प्यारे
सहर्ष राम ने खाया
गीध जटायू को भी प्यारे
शीने से देख लगाया!

रैयदास की शिष्या मीरा
हो गई प्रेम दीवानी
जात–पात और ऊँच–नीच को
कर दिया पानी–पानी।

मौर्य चन्द्र के घर में देखा
सेल्युकश की बेटी
रह गया कह किसके घर में
जात–पात की पेटी!

सद्‌भावों के सृजन का
था न यह समझौता
भाईचारे का सचमुच प्यारे
था सहर्ष यह न्यौता!

कपि के कहने पर गर रावण
सहर्ष सिया को देता
तब कहो क्या फिर लंका में
कपि रे आग लगाता?

रहेंगे कब तक और लिखते
जातिगत परिभाषा
पूरी होगी क्या ऐसे में
सुमनों की अभिलाषा?

भेदभाव से कहो भला क्या
आएगा परिवर्तन
चाहे गा ले गीत भजन या
कर यहाँ हरिकिर्तन।

रहेंगे जब तक यहाँ लिखते
जातिगत परिभाषा
कहो भला क्या पूरी होगी
भरत मिलन की आशा!

ग्राम–रानीपुर, लघारिया, पत्रालय–लगमाहार
व्हाया–मथुरापुर–813222
जिला–भागलपुर (बिहार)
मोबा. 9939877296

खुदा खैर करे

डॉ. सुभाष नारायण भालेराव 'गोविन्द'

हर तरफ हर जगह
बहता खून का सैलाब
खुदा खैर करे

हर तरफ हर जगह
आग में जल रही जन्नतें
खुदा खैर करे

हर तरफ हर जगह
काश्मीर खुशबू–खुशबू से
महकता था मेरा
उजड़ता जा रहा था जन्नतें बाग
खुदा खैर करे

अजीब मंजर है आज
फूल से हाथों में है संग
जिनमें होनी चाहिये थी किताब
खुदा खैर करे

अश्क ही अश्क आँखों में
और जलन है सीने में
आजकल मौसम है वहाँ खराब
खुदा खैर करे

किसी की साजिश है अमन के
खिलाफ यह जंग ही
कौन उलटेगा रुख से नकाब
खुदा खैर करे

कौन है वो जो डसने लगा है
उजालों को मेरे आंगन में
हाय कैसा ढल रहा है आफताब
खुदा खैर करे

किसी के सीने दर्द जन्नतें
काश्मीर है परेशान
कौन इसका देगा मुझे जवाब
खुदा खैर करे

'अवन्तिका' ए–38,
न्यू नेहरू कॉलोनी
ठाठीपुर, मुरार,
ग्वालियर–474011 (म.प्र.)
मोबा. 8989598860

निराशा

✍ रामचरण यादव ''याददाश्त'

व्याकुल है कवि रामचरण
नित्य होता संस्कारों का क्षरण
आज भी नारी सुरक्षित कहां
हो रहा इनका रोज अपहरण

झूठें का बोलबाला जगत में
लेकिन सत्यवादियों की है मरण
मंहगाई ने तो पागल कर दिया
मेहमानों के नहीं भाते है चरण

धर्म के लिए सर्वस्व लुटा दे
दिखते नहीं ऐसे दानी करण
भाषा भी अब बदल रही है
कोई पढ़ता नहीं हिन्दी व्याकरण

चारों ओर अब निराशा छाई
बाद में आयेंगे ईश्वर की शरण
समय है अभी संभल जा 'यादव'
बदल लो अपने भी बुरे आचरण

प्रधान सम्पादक – नाजनीन,
सदर बाजार, बैतूल (म.प्र.) 460001

थोड़ा और उभरने दो

✍ डॉ. सुरेश उजाला

कुछ करता है करने दो
थोड़ा और उभरने दो

सदियों से जो घाव हरे हैं
पहले उनको भरने दो

मानवता के नाते जग में
परपीड़ा को हरने दो

वर्षों से जो बिखरे हुए हैं
उनको और सँवरने दो

बैठे हैं जो नदी किनारे
उनको पार उतरने दो

कुशल कर्म से उसको जोड़ो
पाप–कर्म से डरने दो

खुशबू फैल जायेगी जग में
फूल को पहले झरने दो

मीत भी हो जायेगा दुश्मन
मन को जरा अखरने दो

बन जायेगी श्रेष्ठ कविता
थोड़े भाव उभरने दो

देश में उपजी हरी घास को
गधों को यारों! चरने दो

नहीं है जब जीने की इच्छा
मरता है तो मरने दो।

108, तकरोही, पं. दीनदयालपुरम् मार्ग,
इन्दिरा नगर, लखनऊ –226016 (उ.प्र.)
मोबा. 9451144480

औकात

✍ जयप्रकाश वाल्मीकि

तुमने मुझ से कहा
क्या है तेरी औकात
तो सुनो।
मैं उस औकात का अंश हूँ
जिसने नीलाम होते राजा हरिशचन्द्र को
ऊँची बोली लगाकर खरीद लिया था।
शायद तुम उसे जानते होंगे
तुम्हारे पुरखों ने कहा था जिसे
कालू चाण्डाल, कालू डोम और कालू भंगी।
तुमने मुझ से कहा
क्या है तेरी औकात
तो सुनो।

मैं उस औकात का अंश हूं
जिसने पाला पोसा अपने आश्रम में
लव और कुश को
उन्हीं की सिखाई धनुर्विद्या से
लव कुश ने राम सेना को किया था परास्त
शायद तुम उसे जानते होंगे
तुम्हारे पुरखों ने कहा था जिसे
कहीं दस्यु वाल्मीकि, कहीं चाण्डाल वाल्मीकि
कहीं ब्राह्मण वाल्मीकि कहीं स्वपच वाल्मीकि
तुमने मुझ से कहा
क्या है तेरी औकात
तो सुनो।
मैं उस औकात का अंश हूं
खुशर व नाम से बना था
दिल्ली का शासक
जिसने मुस्लिम शासन से भारत को
कराया था मुक्त
शायद तुम उसे जानते होगे
तुम्हारे पुरखों ने नहीं दिया उसका साथ
मुस्लिम शासन पसंद था एक अछूत का नहीं
इसलिए नहीं लिखा
ठीक से उसका इतिहास
हम
धनाढ्य थे
विद्वान थे
शासक थे
यह मेरे पुरखों की औकात
मैं उसी औकात का अंश हूं।

14, वाल्मीकि कॉलोनी, द्वारिकापुरी के पास
शास्त्री नगर, जयपुर–302016 (राज.)
मोबा. 9057983078

गीत

रहमान अली 'रहमान'

माँग ली रब से मन्नत तुम्हारे लिए।
दो बना भव्य मन्दिर हमारे लिए।।
हम भी पूजा करें, तुम इबादत करो
नेक राहों पे चल सबका स्वागत करो
फिर मिलेगी दुआ कुछ इशारे लिए
हम नहीं चाहते फिर कोई जंग हो
धर्म के नाम पर हर खुशी भंग हो
इसलिए हो मिलन कुछ नजारे लिए
भूल बावर ने की या किया मीर ने
हक उचित न दिया उसकी शमशीर ने
दी बना बाबरी द्वन्द सारे लिए
मुल्क मजबूत करना मेरा काम है
गंगा–जमुनी का होगा तभी नाम है
चाँद मुट्ठी में होगा सितारे लिए
राम–रहमान में फर्क करना गलत
गर जमीं आप हैं तो बना मैं फलक
जी सकोगें नहीं बिन सहारे लिए।

ई–रिक्शा चालक
ग्राम व पो. धवाय – 272194 (धोवड़ी)
जिला–बस्ती (उ.प्र.)
मोबा. 9935292486

ग़ज़लें

जितेन्द्र सुकुमार 'साहिर'

सारे आलम का वो सहारा है
उसकी फितरत हमें गंवारा है

जीत उसको मिली मुहब्बत में
जिसने अपनी अना को मारा है

दर्द उठता है जब भी सीने में
हमने माँ–बाप को पुकारा है

छोड़कर तुझको मैं कहाँ जाऊं
मेरे जीवन का तू सहारा है

ज़िन्दगी है ग़मों का इक दरिया
जिसका साहिर नहीं किनारा है।

●

ग़म के साये में ज़िन्दगी क्यों है
मुझसे रुठी हुई खुशी क्यों है

जब से दुनिया बनाई है तू ने
तेरी दुनिया में खलबली क्यों है

घर का दीपक बुझा दिया तू ने
अब तुझे ख़ौफ़े तीरगी क्यों है

ग़म नहीं है अगर बिछड़ने का
तेरी आँखों में फिर नमी क्यों है

कल तलक जिससे थी शनासाई
आज 'साहिर' वो अजनबी क्यों है।

'उदय आशियाना' चौबेबाँधा
राजिमा, जिला गरियाबंद (छ.ग.)

डॉ. अशोक 'गुलशन' की दो ग़ज़लें :–

(1)

संस्मरणों में सिमटकर रह गयीं जब–जब कथायें,
हो गयीं कंठस्थ हमको वेद की तब हर ऋचायें।
अब किस तरह जीवित रहें हम समझ में आता नहीं,
और हम क्या–क्या करें हों साथ में जब विवशतायें।
रह ही गया अन्तर कहाँ तब गाँव–घर–हरिद्वार में,
हो गयीं दूषित मनुज की जब यहाँ पर भावनायें।
तुम बताओ किस तरह से अब हम रहें इस देश में,
लग रहीं चौपट तुम्हारी जब यहाँ सब व्यवस्थायें।
हो गयी निर्भर तुम्हीं पर जब यह हमारी जिंदगी,
क्या कहें किससे कहें फिर हृदय की अब हम व्यथायें।
उम्र का अन्तिम प्रहर है उस पार जाने के लिये,
कब भला साकार होंगी स्वप्न की हर कल्पनायें।

(2)

तुम्हारी याद से महरूम यदि यह ज़िन्दगी होती,
नहीं फिर ग़म कोई होता नहीं कोई खुशी होती।

जो करता पाप है होता वही है पुण्य का भागी,
ये होता सच अगर यह बात तुमने ही कही होती।

फ़ना होते रहे सब उम्र भर झूठे भरोसे पर,
मुहब्बत में किसी की जान की क़ीमत नहीं होती

हिफ़ाज़त में चमन की जब न कोई बागवां होता,
न होता फूल कोई भी नहीं कोई कली होती।

कभी सैलाब दुनिया में न आता भूलकर 'गुलशन',
बादल से समन्दर की रही गर दोस्ती होती।

उत्तरी कानूनगोपुरा, बहराइच–271801 (उ.प्र.)
मोबा. 9450427019

लघुकथाएँ

डॉ. मधुर नज्मी की दो लघुकथाएँ :–

एक कथानक का पटाक्षेप

कम ही कहानियाँ सच के आसपास होती हैं। अधिसंख्य कहानियाँ मिथकीय परिधि में होती हैं जिनमें कल्पनाशीलता का ही आधिक्य होता है। यह पंक्तिकाएं एक कहानी नहीं, हकीकत से जुड़कर स्थिति की वाजिब आईनादारी करने का अपना प्रयास कर रहा है।

एक कलाकार अपनी अवस्था में बूढ़ा हो गया। अपनी कलाकारिता से वह काफी धन कमाकर अपने पूरे परिवार का भरण–पोषण करता रहा। बूढ़ा कलाकार शेर की खाल ओढ़कर, चट्टी, चौराहे और कचहरियों में अपनी कला का प्रदर्शन करता था। उस बूढ़े कलाकार की कला से, उसके पड़ोस का एक बच्चा काफी प्रभावित था। बूढ़ा धीरे–धीरे, अपने हाथ–पाँव से मजबूर होता गया। पड़ोस का बच्चा, उसके फ़न से सीख लेकर उसकी कलाकारिता को करने लगा। एक दिन जब एक बड़े मजमें में वह पौढ़ बच्चा उस बूढ़े के

अन्दाज में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहा था तो वह बूढ़ा कलाकार कहीं से वहाँ जा पहुँचा। बच्चे की कला से बूढ़ा खिन्न नज़र आया। बूढ़े ने कहा, 'तुमने मेरी नकल तो कर ली किन्तु जिस हुनवरी से मैं कलाकारिता करता था, तुम नहीं कर पा रहे हो।' बच्चे ने बूढ़े को चुनौती देते हुए कहा, 'दादा, तुझमें अगर दम है, तो मेरे जैसा करके मजमे को दिखा दो।' बूढ़े ने कहा, 'शेर की खाल मुझे दो' बच्चे ने खोल उतार दी। खोल ओढ़कर शेर की दहाड़ और तेजी में बूढ़ा कलाबाजियाँ करने लगा। लोग वाह–वाह करने लगे। अति उत्साह में बूढ़े कलाकार ने आसमानी छलांग लगायी और वहीं से ज़मीन पर गिरा और उसकी मृत्यु हो गयी। हर कलाकार के समर्पित मन की अन्ततः स्थिति कुछ ऐसे ही अवसान पाती है।

बुढ़िया की दास्तान का निहितार्थ

बुढ़िया गरीब थी, वह अपना गुज़र–बसर, अपनी पुरानी चक्की में लोगों का अनाज पीस कर करती थी। चलते–चलते हथ चक्की घिर गयी। वह दानों को काट नहीं पाती थी। बुढ़िया ने सोचा 'काश! कोई चक्की छिनवा आ जाता तो उससे चक्की छिनवा लेती' कुछ ही देर में एक चक्की छिनवा ने आवाज़ दी। 'चक्की छिनवा लो' बुढ़िया को मन की मुराद मिल गयी। वह काफ़ी खुश हो गयी। बुढ़िया ने कहा, 'बेटा मेरी चक्की छीन दो। मैं बेटा सिर्फ पानी पिला सकती हूँ। मेरे पास देने को कुछ नहीं है।' चक्की छिनवा ने वाले ने बुढ़िया पर तरस खाकर कहा, 'माँ मैं तुम्हारी चक्की छीन दूँगा' बुढ़िया बाँस के बने छप्पर वाले घर में उसे ले गयी और चक्की को दिखाकर अपना घड़ा लेकर पानी लेने चली गयी। चक्की छिनवा, अपनी छेनी, हथौड़ी से छीनने के लिये उठा ली। पहले ही 'स्ट्रोक' में चक्की दो टूक हो गयी। चक्की छिनवा सोचने लगा। 'बाप रे बाप मुझसे अनर्थ हो गया। बुढ़िया आयेगी, देखेगी तो बहुत रोयेगी। ऐसा सोचते हुए जल्दी में उठा, तो सिकहर पर रक्खे हुए माटी की हंड़िया से उसका सर टकरा गया और आटा बिखर गया। जल्दबाजी में बांस घर से निकलते हुए चँचरा (बाँस का दरवाज़ा) उसकी धोती में फँसकर टूट गया। जैसे ही वह कुछ आगे बढ़ा बुढ़िया घड़े में पानी लेकर आती हुई दिखाई पड़ी। पास आकर बुढ़िया ने कहा 'बेटा चलो, पानी तो पी लो। बेटा मैं तुम्हारा उपकार नहीं भूलूँगी।' यह कहते हुए बुढ़िया ने उसका दामन पकड़ लिया। ना–नुकूर में, बुढ़िया के हाथ से घड़ा छूट गया और फूट गया। बुढ़िया ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी। चक्की छिनवा सोचने लगा, बुढ़िया किस–किस को रोयेगी। बिखरे हुए आटे के लिए, फूटी हुई चक्की के लिये या टूटे हुए चँचरा के लिये–आज की व्यवस्था में प्रत्येक आम व्यक्ति किस–किस के लिये रोये। एक बारगी बढ़ी हुई मँहगाई, शिक्षा–व्यवस्था की अवमानोन्मुखी कार्यप्रणाली, आर्थिक मन्दी, साहित्य–संस्कृति के निरन्तर गिरते हुए में 'यार, मानव और 'महामानवों' की चारित्रिक पतनशीलता, हिन्दी भाषा के बरक्स वैदेशिक भाषाओं से बढ़ता हुआ वर्चस्व, सारे के सारे व्यवस्था के उपादान मनुष्यात्मकता के विरोध में खड्गहस्त हैं। एक बुढ़िया की दास्तान आज कमोवेश सबमें दिखने लगी है। आखिर कोई किस–किस चीज़ का रोना रोये।

महानिदेशक–काव्यमुखी साहित्य अकादमी
गोहाना मुहम्मदाबाद–276403, जिला–मऊ (उ.प्र.)
मोबा. 9369973494

टेंशन

मधु हातेकर

कभी–कभी कोई ऐसा दिन निकलता है कि सवेरे ही टेंशन देना शुरू हो जाता है। रात को आज की कॉन्फर्स के लिए नोट्स बनाकर रखे थे। सवेरे अवि किस फाईल में जल्दबाजी में रख दिये ढूंढ रहा था। परेशान, इतने में जया उसके लिए चाय लेकर पहुंची, उसका वालेट, रूमाल, गाड़ी की चाबी टेबल पर रख दी, फिर भी अवि ने अपना सारा गुस्सा जया पे ही निकाला। फिर जया ने मीठी सी मुस्कान देते हुए टेबल के नीचे पड़े नोट्स उसके हाथ में दिये। जल्दी चाय पी

नोट्स फाईल में रखे और फाईल बेग में रखी और चल दिया। जया भी पीछे–पीछे फाटक तक छोड़ने गई, बाय–बाय किया, पर अवि ने पीछे मुड़ के भी नहीं देखा, पर जया को टेंशन दे गया, गुमसुम सी हॉल में आयी तो सानिया उस पर बरस पड़ी–ये क्या? मम्मी रोज–रोज वही बटाटे की सब्जी, टिफिन टेबल पर पटककर, बेग उठाये खाड़–खाड़ पैर का आवाज करती चल दी, सानिका को छोड़कर दरवाजे पर कदम रख ही था कि मम्मीजी की आवाज आयी–जया, ओ जया, कितनी देर से चाय मांग रही हूँ, मुझे प्रवचन में जाने के लिए देर हो रही है, ला रही हूँ, मम्मी दो मिनट, मम्मीजी की जल्दबाजी में किचन के दरवाजे से टकराई गिरते–गिरते बच गई, फिर भी पैर में थोड़ी चोट लग ही गई, किचन में जाकर चाय बनाई, एक ट्रे में चाय और बिस्किट की प्लेट रखी और ट्रे लेकर मम्मीजी के रूम जाकर उन्हें दी। चाय पीकर वो चली गई।

सबके जाने के बाद उफफ् कर जया ने सांस ली और धमम् से सोफे पर बैठ गई, सवेरे से सबका काम करते–करते अब जया ने चैन की सांस ली। 10–15 मिनिट बैठकर अपने लिए चाय बनाई, हॉल में सोफे पर बैठकर पेपर पढ़ते–पढ़ते चाय पीने लगी।

दोपहर को खाना खाकर सोफे पर बैठ के टीवी आन किया। सवेरे से मन इतना विचलित रहा कि कहीं मन ही नहीं लग रहा था। टीवी बंद कर मेगजीन पढ़ने मन लगाना चाहा पर उलट–पुलट कर मेगजीन पढ़ने में भी मन नहीं लगा और वैसे ही रख दी, बेडरूम में आकर बेड पर लेट गई पर नींद तो नहीं आयी पर आराम मिलने से कुछ रिलेक्स महसूस हुआ, थोड़ी देर बाद डोर बेल बजी जया ने दरवाजा खोला तो सानिका अन्दर आयी और बोली–मम्मा, अच्छा ही रहा टिफिन नहीं ले गई, शालू का बर्थ डे था, उसने सबको कैंटीन में आज पार्टी दी और रात को उसके घर में शानदार पार्टी है, थोड़ी ही देर बाद मम्मीजी भी आ गई, अरे जया, प्रवचन के बाद खन्ना हमें होटल में ले गई, आज मैं खाना नहीं खाऊंगी, कहकर अपने रूम चली गई।

देखते–देखते शाम हो गई, मोबाइल की रिंग बजी–जया ने मोबाईल उठाया–हलो, जया, आज की कॉन्फर्स में प्रेजेंटेंशन बहुत अच्छा रहा, हमारी कम्पनी को तीन करोड़ कांट्रेक्ट मिल गया। आज रात पार्टी है, घर आने में देर होगी, थेंक यू जया और स्वॉरी भी सवेरे खामोखां तुम पर गुस्सा निकाला–बिगड़ा, स्वॉरी, सवेरे से टेंशन में रही जया अब काफी रिलेक्स और फ्री महसूस कर रही थी। सानिका और अवि दोनो पार्टी में गये है, मम्मी जी के खाने का टेंशन नहीं, जया ने अच्छी सी साड़ी पहनी, पर्स उठाई और मनपसन्द मॉल में शॉपिंग करने चली गई और लौटी तो पूरी तरह फ्रेश होकर लौटी थी।

6, लुंकड एव्हिन्यू, विमान नगर, पुणे-14

कहानी सबको रोजगार की

प्रबोध कुमार गोविल

अच्छा मौसम था तो सारे जानवर एक बरगद के नीचे इकट्ठे हो गए। देखते–देखते भीड़ सभा में बदल गई। सभी से कुछ न कुछ बोलनेको कहा गया।

शुरूआत घोड़े ने की–हम सब खाने, सोने और लड़ने के अलावा कुछ नहीं करते। इंसान को देखो, उसके पास ढेरों काम हैं। उसका समय कितनी आसानी से कट जाता है। हम दिन भर बैठे ऊँघते हैं और सूर्योदय से ही सूर्यास्त का इंतजार करते हैं।

बात दमदार थी, सबको ठीक लगी। यह तय किया गया कि कल से सब अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार कुछ भी काम करेंगे।

अगली सुबह जंगल में कर्म–युद्ध का बिगुल बजाती हुई उगी। पक्षियों ने सोचा, हम दिन भर ज़मीन पर दाना चुगते हैं, जहाँ कुत्ते–बिल्लियों के आक्रमण का भय होता है। क्यों न हम सब मिलकर दानों को पहाड़ की ऊँची चोटी पर पहुँचा दें जहाँ हम सिर्फ उड़ कर पहुँच सकें, और कोई भी नहीं। वे इस काम में जुट गए।

मछलियाँ भी सुबह से ही काई और मिट्टी से तालाब की चार–दीवारी बनाने में जुट गई, ताकि अन्य

कोई पशु–पक्षी पानी के आसपास न आ सके। चूहे और खरगोश ने मित्रों के साथ मिलकर अपने भोजन को बिलों में घसीटना शुरू कर दिया, ताकि अन्य प्राणियों की पहुँच से वह बच सके। घास–पात सब ज़मीन के नीचे जाने लगा।

अब घोड़े का माथा ठनका। उसे अपने सुझाव का परिणाम समझ में आया। देखते–देखते घास, दाना, पानी सब पहुँच से दूर जाने लगा। फाकाकशी की नौबत आ गई। आखिर सभा फिर हुई, घोड़े ने मांग की कि भोजन–पानी को जंगल की सामूहिक संपत्ति घोषित किया जाये, और इसे वापस यथास्थान लाया जाए।

इतना ही नहीं, इसके लिये भी कड़े कदम उठाये गये कि भविष्य में फिर कोई ऐसा न कर पाए। प्रस्ताव पारित किया गया कि इंसानों की नक़ल को जंगल–विरोधी गतिविधि माना जायेगा। घास, पात, दाना, पानी की ज़माखोरी को घोर–अपराध का दर्जा दिया जाएगा। ऐसा करने वालों को रोकने के लिये थोड़ी–थोड़ी दूर पर वन–थाने बनाए जायेंगे। इस काम में लिप्त, पकड़े गए लोगों को सजा देने के लिये कोर्ट–कचहरियाँ बनाई जाएंगी। मारपीट से घायल होने वाले और मिलावट से बीमार पड़ने वालों के इलाज के लिये कदम–कदम पर अस्पताल बनाए जायेंगे। कोने–कोने में विद्यालय खोले जायेंगे जिनमें आने वाली नस्लों को इन करतूतों से दूर रहने की शिक्षा दी जाएगी। इंसानों की छाया से भी जंगल की सुरक्षा करने के लिये जिम्मेदार जानवरों की एक समिति का गठन किया गया।

बी–301, मंगलम् जाग्रति रेजीडेंसी,
447, कृपलानी मार्ग, आदर्श नगर,
जयपुर–302004 (राज.)
मोबा. 91 63769 50588

हौसलों की उड़ान : दलित उत्पीड़न का यथार्थ दस्तावेज

पुस्तक समीक्षा **✍ डॉ. अमितभाई एन. पटेल**

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रलाय, दिल्ली द्वारा सन् 2016 में हिन्दीतर हिन्दी भाषी लेखक पुरस्कार से सम्मानित तथा भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, गुजरात साहित्य अकादमी, महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी एवं अन्य विभिन्न राष्ट्रीय सम्मानों से पुरस्कृत डॉ. धीरजभाई वणकर की पहचान समीक्षक एवं बाल साहित्यकार के साथ–साथ एक कवि के रूप में भी है। गुजरात के हिन्दी साहित्यकारों में अपना नाम दर्ज कराने वाले डॉ. धीरजभाई वणकर कवि, आलोचक, समीक्षक, संपादक एवम् अच्छे अनुवादक है। जहाँ तक मेरा मानना है वे इन सबसे ऊपर एक आदर्श, कर्मशील एवं निष्ठावान अध्यापक है। मूलतः गुजराती होने पर भी हिन्दी भाषा पर उनका प्रभुत्व प्रशंसनीय है। डॉ. धीरज जी की अब तक 18 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। जिसमें–'मध्यकालीन एवं आधुनिक हिन्दी साहित्य' 'कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ' (हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात द्वारा पुरस्कृत), 'भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना' (डॉ. धनंजय चौहान के साथ), 'दलित विमर्श', 'हिन्दी–गुजराती दलित साहित्य के विविध सन्दर्भ', 'अब चुप थोडे रहेंगे' (कविता संग्रह), 'रेणु और कमलेश्वर की कहानियों में आँचलिकता', 'तिल का ताड़' (हाइकु संग्रह), हिन्दी दलित आत्मकथा विमर्श, हिन्दी दलित एवम् आदिवासी साहित्य अंतरंग पड़ताल, गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ, माणस जातनुं शुं ठेकाळु (गुजराती कविता संग्रह), हौसलों की उड़ान (कविता संग्रह), चन्द्रा श्रीमाळीनी प्रतिनिधि वार्ताओ (संपादित), नया इतिहास (अरविंद वेगडा की गुजराती कविताओं का हिन्दी अनुवाद), 'आनंद मीमांसा–साहित्य, कला और विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में' भाग–1 और 2 (सह संपादित),

'गुर्जर नारीना नवला रूप' (सह संपादित), 'केळवणीना आधार स्तम्भों' (सह संपादित) प्रमुख है। वरणकरजी की अधिकतर कविताएँ गुर्जर राष्ट्रवीणा, यू.एस.एम. पत्रिका, संकल्प, आश्वस्त, सम्यक् पब्लिक भारत, साप्ताहिक बहुजन, साहित्य परिवार, शब्द संचार, साहित्य–वीथिका, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है।

'हौसलों की उड़ान' धीरजभाई का तीसरा काव्य संग्रह है। जो ज्ञान प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ है। पूर्णतः अम्बेडकरी विचारधारा के वाहक एवं प्रतिबद्ध डॉ. वणकर जी के प्रस्तुत कविता संग्रह में 71 कविताएँ संकलित है। संग्रह की ज्यादातर कविताएँ दलित चेतना एवं डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की विचारधारा को अभिव्यक्त करती है। वैसे भी डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा दलित कविता को प्रेरणा प्रदान करती है। डॉ. धीरजभाई सामाजिक विषमताओं के सामने ज्वलनशील शैली में विद्रोह जगाने वाले साहित्यकार है। प्रस्तुत कविता संग्रह में संकलित कविताओं में केवल कवि का विद्रोह ही नहीं बल्कि दलित समाज की पीड़ा का भी मार्मिकता से यथार्थ चित्रण किया गया है। उन्होंने मात्र दलित शोषण की चर्चा नहीं की अपितु सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा भी दी है। आज भी गांव हो या शहर में दलित नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर है। दलित का हर पल शोषण होता है। दलित सदियों से हाशिए पर रहे है, उसे पशु से बदतर समझा गया है। वे समानता, सुरक्षा या समरसता की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे है। इसलिए संग्रह की प्रथम कविता 'सजा' में कवि कहते है –

"आज भी
वो
दूर–दूर गाँवों में
बड़े–बड़े शहरों की चाल में
और
झोपड़ पट्टियों में
नरक जैसा जीवन जीने को मजबूर है।"[1]

दलित पढ़–लिखकर कितना भी उच्च अधिकारी क्यों न बन जाये किन्तु उसकी जाति हर पल उसकी राहों में बाधा बनती हैं। आज धर्म और जाति के नाम पर सब लोग खीर खा रहे है। अगर कोई दलित नेता किसी मंदिर का उद्घाटन करता है तो उसके बाद महंत लोग उस मंदिर को दूध से धुलवाते है। दलित मजदूर मंदिर का निर्माण कर सकता है, किन्तु मंदिर बन जाने के बाद उसके लिए प्रवेश निषेध होता है। यहां तक की स्कूल में भी दलित बच्चों के साथ पक्षपात किया जाता है। अगर कोई दलित छात्र पढ़ाई में तेज हो तो सवर्ण शिक्षक उसकी तेजस्विता को दबाने का प्रयत्न करते है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे समाज में छुआछूत एक गंभीर रोग की तरह पैठ गया है। सवर्ण लोग दलितों से सेवा करवाते है तब उन्हें छूत नहीं लगती है, यहां तक की दलित बहू–बेटियों को हवश का शिकार बनाते है तब भी उनको छूत नहीं लगती है। धीरज जी ने प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में इस पीड़ा को निर्भीकता से उजागर करने का प्रायस किया है।

आजादी के सात दशक के बाद भी दलितों की स्थिति में सुधार नहीं आया है। आज भी दलितों के साथ अत्याचार, हिजरत, शोषण जैसी घटनाएँ घटती हैं। संविधान में समानता, स्वातंत्र्यता और अन्य अधिकारों की बात की गई है किन्तु खेद के साथ कहना पड़ता हैं कि उन्हें ये अधिकार नहीं मिले। दलित जब अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाता है तो उसकी आवाज येन–केन प्रकारेण दबायी जाती है। किन्तु आज के दलित युवा जाग्रत हो चुके है। दलितों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने आज के दलित एकजुट हो रहे है। साथ ही क्रोध की ज्वाला तथा चेतना की चिनगारी से सवर्णो की मानसिकता को ध्वस्त करने के लिए आज भीमसेना तैयार है –

"अब हम
सचमुच जाग चुके हैं
....
अब हमें कतई

कमजोर मत समझना
'भीमसेना' तैनात है
अपमान के खिलाफ आवाज ठाने
हमने नई राह ढूँढ़ ली है
चेतना की।''[2]

मनुवादी मानसिकता के कारण देश में भाषावाद, धर्मवाद, जातिवाद, वर्णवाद, वर्गवाद, वंशवाद और लिंगवाद जैसे संकुचित वाद विकसित होते रहे और दलित, पीड़ित, शोषित प्रजा को हाशिए में धकेल दिया जाता है। परिणाम स्वरूप इस दलित प्रजा ने निजी यातना और अस्मिता से अपने समाज को अभिव्यक्त करने के लिए कलम के द्वारा अपनी वेदना व्यक्त की। भारतीय समाज में व्यक्ति की पहचान उसकी जाति से होती है, दलित जहाँ–जहाँ जाते हैं, वहाँ साथ में जाति होती है। भेदभाव से युक्त भारतीय समाज व्यवस्था में नाम के साथ जाति अटूट रूप से जुड़ी हुई होती हैं। जाति के नाम पर दलितों का शोषण प्राचीनकाल से होता आ रहा है। आज समाज कई वादों में विभाजित हो चुका है, मानवतावाद पर आज जातिवाद हावी हो रहा है। आजादी के इतने सालों बाद भी हाशिये के लोग आज भी आजाद नहीं है। जातिवाद की जंजीरों ने ऐसे जकड़ कर रखा है कि हर दिन हमें बदायूँ, रोहित वेमुला, भीमा कोरे गांव की घटना से रुबरु होना पड़ रहा है। इसीलिए डॉ. धीरज जी अपने विद्रोहात्मक स्वर में सरकार की योजनाओं पर करारा व्यंग्य करते हुए कहना चाहते है कि आज अभियान पर अभियान चलाये जा रहे है–सर्व शिक्षा अभियान, जन स्वास्थ्य अभियान, स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान आदि। किन्तु –

'हम पूछते देश के कर्णधारों से
क्या! ऐसे अभियान भी नहीं चलाये जाने चाहिए,
मसलन–
अस्पृश्यता नाबूदी अभियान,
जातिवाद भगाओ अभियान,
सामाजिक समरसता अभियान,
गरीबी हटाओ अभियान,
पूँजीवाद नाबूदी अभियान।।''[3]

वस्तुतः दलित साहित्य अम्बेडकरी विचारधारा को लेकर चलता है। अम्बेडकर को दलितों के मसीहा कहा जाता है। बाबासाहब मरते दम तक दलितों के उत्थान के लिए कार्य करते रहे। दलितों के मसीहा बाबासाहब ने दलितों में ऊर्जा भरने का स्तुत्य कार्य किया है। डॉ. धीरजभाई वणकर जी ने डॉ. बाबासाहब अम्बेडकरी विचारधारा को चरितार्थ किया है। वे अपने निजी जीवन में अम्बेडकरी विचारधारा के आग्रही है। डॉ. धीरज जी की कविताएँ स्वतंत्रता, समता, भाईचारा से समृद्ध सत्यशोधक एवं सत्यधर्मी न्यायनिष्ठ विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है। कवि जातिगत विष को मिटाने के लिए बाबा साहब से कह रहे है कि –

''तुम्हें आना पड़ेगा, बहुआयामी चेतना
हमारी स्वतंत्रता, समता और सभ्यता की चांदनी
दलित आदिवासी मजदूरों के खातिर
क्रान्ति के बिगुल और शंखनाद का शुभारंभ करने...''[4]

कवि ने दलितों के उज्जवल भविष्य की कामना की है। साथ ही उनका मानना है कि आने वाला कल दलितों का होगा। आज भले ही उसको आगे बढ़ने से रोका जा रहा हो, किन्तु शिक्षा के माध्यम से वे आने वाले दिनों में ऊँचाईयाँ सर करेंगे। आज दलितों ने बुद्ध की चाह और बाबा साहब की राह से आगे बढ़ने का संकल्प कर लिया है –

''बुद्ध की राह पर
प्रज्ञा, करुणा समता की चाह पर
और
बाबा साहब के विचारों का अनुशीलन कर
हमने रास्ता ढूँढ़ लिया
चेतना का
शिक्षा पाकर।''[5]

डॉ. वणकर जी ने 'हौंसलों की उड़ान' कविता–संग्रह की कविताओं में दलितों के शोषण और दमन को मुखरता से प्रस्तुत किया है। दलितों के भाग्य में केवल मजबूरी और लाचारी ही है। दर्द से उनकी जिंदगी शुरू होती है और दर्द से खत्म होती है।......

– शेष भाग अगले अंक में

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

26 नवम्बर 2019

संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिविजन 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार